बाल भारती

भाग 2

संयुक्ता लूदरा
सत्येंद्र वर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986 के प्रारंभ होने के साथ ही ऐसी शिक्षण सामग्री की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी जो इस नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति मे सहायक हो। इस नीति के अनुसार शिक्षा बाल केंद्रित होगी और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाएगा। इस शिक्षा नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को *केंद्रिक शिक्षाक्रम* के रूप में स्थान दिया गया है। यह एक दूरगामी नीति है और यदि इसका पालन सही ढग से किया जाए तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्वपूर्ण योगदान मिल सकेगा।

प्रस्तुत पुस्तक *बाल भारती, भाग 2* का संशोधित संस्करण परिषद् द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा हिंदी पढ़ाने के लिए निर्मित *बाल भारती पुस्तकमाला* की दूसरी कड़ी है। *बाल भारती, भाग 1* में हिंदी के सभी स्वरों, व्यजनों, मात्राओं और कुछ प्रमुख संयुक्ताक्षरों तथा उनसे बनने वाले शब्दों और वाक्यों के पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराया गया था। *बाल भारती, भाग 2* में प्रमुख उद्देश्य यह रहा है कि कक्षा 2 में पढ़ने वाले छात्र व छात्राएँ अधिकांश संयुक्ताक्षरों से बनने वाले शब्दों, उनसे निर्मित वाक्यों तथा ऐसे वाक्यों से निर्मित सरल पठन सामग्री को भली प्रकार पढ़ सकें। देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनी व्यवस्था में प्राप्त सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए इस पाठमाला में यह प्रयत्न रहा है कि बच्चे कम से कम समय में अधिक से अधिक पठन-योग्यताओं का विकास कर सकें। इस प्रकार ये बच्चे दूसरी कक्षा मे जाने तक इतने समर्थ हो जाएँ कि वे न केवल हिंदी विषय अपितु हिंदी भाषा में लिखी अन्य विषयों की पुस्तकों को भी भली प्रकार समझ से पढ़ सकें।

बाल भारती, भाग 2 में साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा कविता, कहानी, वार्तालाप, पहेली, वर्णन और निबंध आदि में पाठ प्रस्तुत करके पठन सामग्री में विविधता और रोचकता लाने का प्रयास किया गया है। पाठों के निर्माण और चयन में ऐसे विषयों और मूल्यों का समावेश किया गया है जिनसे बच्चों की जानकारी बढ़ने के साथ उनमें वांछनीय और अपेक्षित जीवन मूल्यों का विकास हो सके। जिन विचारों और मानव मूल्यों पर बल दिया गया है उनमें से कुछ है, देशप्रेम, साहस, सहयोग, संकल्पशक्ति, परस्पर सद्भाव, विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन, समयपालन, पशु-पक्षियों के प्रति प्यार, सफ़ाई तथा परिश्रम का महत्त्व आदि। *केंद्रिक शिक्षाक्रम* मे सम्मिलित मूल्यों का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। हमे विश्वास है कि पुस्तक पढ़ने के उपरांत विद्यार्थियों में पठन रुचि विकसित होगी तथा वे अपने स्तर की अन्य पुस्तकें पढ़ने में रुचि लेने लगेंगे। *शिक्षकों के लिए* सम्मिलित की गई सामग्री के अंतर्गत पुस्तक को कक्षा में पढ़ाने के लिए आदर्श

पाठ योजना पर सविस्तार चर्चा की गई है तथा व्यावहारिक और उपयोगी सुझाव भी दिए गए हैं। यदि अध्यापकगण इन शिक्षण बिंदुओं पर ध्यान देंगे तो पुस्तक का अध्ययन और अध्यापन सरल व सुगम हो जाएगा।

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण वर्ष १९८८ में प्रकाशित किया गया था। पुस्तक का निर्माण सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की श्रीमती संयुक्ता लूदरा और डॉ. सत्येंद्र शर्मा ने प्रो. अनिल विद्यालंकार के निर्देशन में किया था। परिषद की नीति के अनुसार *बाल भारती, भाग २* का अखिल भारतीय स्तर पर मूल्यांकन किया गया। पुस्तक के मूल्यांकन में उन अध्यापकों का अभिमत और सहयोग लिया गया जो पुस्तक के अध्यापन से संबद्ध हैं। मूल्यांकन प्रतिवेदन के सभी निष्कर्षों, सुझावों तथा संस्तुतियों पर सविस्तार चर्चा होने के उपरांत आवश्यक, उपयोगी और अपेक्षित संशोधन किए गए हैं। प्रस्तुत संशोधित संस्करण के अंतर्गत कुछ पाठों में आवश्यकतानुसार संशोधन और परिवर्तन के अतिरिक्त दो कविताएँ, दो कहानियाँ और एक पाठ पहेली पर जोड़ा गया है। सूचना और संदर्भों की दृष्टि से पाठों को आधुनिक बनाया गया है। विषय, विधा तथा प्रस्तुति सभी दृष्टियों से *बाल भारती, भाग २* के संशोधित संस्करण का अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा स्वागत होगा, ऐसी आशा है।

विभाग के डॉ. सत्येंद्र शर्मा ने पुस्तक का संशोधित प्रारूप तैयार किया तथा अत्यंत परिश्रम और मनोयोग से इसका संपादन किया है। इस पुस्तक के संशोधन में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, अवकाश प्राप्त प्रवाचक, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की प्रमुख भूमिका के अतिरिक्त अनेक अनुभवी अध्यापकों, शिक्षाविदों तथा भाषाविदों से सहयोग और सहायता मिली है। इन सभी के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

इस पुस्तक को और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अध्यापकों और अन्य विद्वानों द्वारा भेजे गए सुझावों को प्राप्त करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

पुस्तक-संशोधन में विशेष सहयोग

कु. ***कुसुम लता अग्रवाल***, राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, [illegible], नई दिल्ली, ***श्री लोकेंद्र*** [illegible] प्राचार्य, [illegible] हाईस्कूल, कलाड़िया, इंदौर, मध्य प्रदेश; ***श्रीमती प्रभा शर्मा***, दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, नई दिल्ली, ***श्रीमती ताप्ती मुखर्जी***, केंद्रीय विद्यालय (एन सी ई आर टी शाखा), श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली, ***श्रीमती रोहिणी कृष्णानंद***, प्रायोगिक विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर, कर्नाटक, ***श्री जटेश्वर राय***, केंद्रीय विद्यालय, मुगलसराय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, ***कु. उषा वधवा***, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, [illegible] 1, नई दिल्ली; ***श्रीमती विद्योतमा पाण्डे***, दिल्ली पब्लिक स्कूल, [illegible] नई दिल्ली, ***श्री विजय नारायण पाण्डे***, बसंत वैली पब्लिक स्कूल, बसंत कुंज, महरौली-[illegible] मार्ग, नई दिल्ली, ***श्रीमती रक्षा सिसोदिया***, प्राचार्या, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, [illegible] भोपाल, मध्य प्रदेश, ***कु. उर्मिल लूथरा***, अवकाश प्राप्त सहायक शिक्षा अधिकारी, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली और ***श्री जगमोहन सिंह***, अवकाश प्राप्त प्रवक्ता, उत्तर प्रदेश राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद। ☐

शिक्षकों के लिए

बाल भारती पुस्तकमाला की यह दूसरी पुस्तक है। पहली पुस्तक समाप्त करते-करते बच्चों में सभी स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, अनुस्वार तथा उनसे बनने वाले कई सौ शब्द पढ़ने की योग्यता विकसित हो जाती है। कुछ संयुक्त व्यंजनों का ज्ञान दृश्य शब्दों के रूप में पहली पुस्तक में दिया जा चुका है। इस पुस्तक में विशेष रूप से संयुक्त व्यंजनों को सिखाने का प्रयत्न किया गया है। इससे बच्चों में हिंदी भाषा के कई हज़ार शब्दों को पढ़ने की योग्यता का विकास हो पाएगा। जहाँ-कहीं नए लिपि संकेत दिए गए हैं वहाँ उनका कई बार प्रयोग करके बच्चों का ज्ञान दृढ़ करने का प्रयत्न की गई है। बाद में भी उनकी यथास्थान आवृत्ति की गई है। नए शब्दों और वाक्यांशों की भी इसी प्रकार आवृत्ति की गई है जिससे बच्चों के पढ़ने की गति तीव्र हो सके।

पुस्तक पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

दूसरी कक्षा तक आते-आते बच्चों की स्वाभाविक झिझक काफ़ी कम हो जाती है और वे पाठशाला के परिवेश से पूर्णतया परिचित हो जाते हैं। उनमें कुछ समय तक एक स्थान पर बैठने और अध्यापक अथवा किसी साथी द्वारा कही गई बात को धैर्यपूर्वक सुनने की योग्यता भी आ जाती है। बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने की आदत का लगातार विकास करें, साथ ही उन्हें लगातार सक्रिय बनाए रखें।

बालक/बालिकाएँ जाने-पहचाने शब्दों का वाक्यों में सप्रवाह प्रयोग कर सकें, वे छोटी-छोटी कविताएँ, कहानियाँ सुना सकें तथा संवाद आदि में सक्रिय भाग ले सकें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। पाठों के अतिरिक्त अपने परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं पर वे खुलकर चर्चा कर सकें, इसके लिए प्रश्न पूछकर उन्हें सक्रिय रखें। उदाहरण के लिए परिवेश में कोई त्योहार, विवाह अथवा अन्य कोई पारिवारिक समायोजन, अनाज बोना और फसल काटना, वर्षा होना, किसी व्यक्ति का गाँव अथवा शहर से आना आदि प्रतिदिन के स्वाभाविक विषयों पर बिना किसी झिझक के बातचीत करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए।

दूसरी कक्षा तक बोलियों का प्रभाव कुछ कम हो जाता है और बच्चों का झुकाव हिंदी भाषा के परिनिष्ठित रूप की ओर होने लगता है। जिन बच्चों में अभी भी हिंदी में बात करने अथवा प्रश्न का उत्तर देते समय अपनी बोली का प्रयोग करने की प्रवृत्ति हो, उनकी ओर विशेष ध्यान दें। समय-समय पर उनका ध्यान भाषा के परिनिष्ठित रूप की ओर दिलाएँ जिससे वे बोलियों के प्रभाव से अधिकाधिक मुक्त हो सकें।

बालक/बालिकाओं को साहित्य की विविध विधाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से पुस्तक में कविता, कहानी, वर्णन, वार्तालाप आदि विधाओं में पाठ प्रस्तुत किए गए हैं। एक पाठ में पहेलियाँ भी दी गई हैं। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे अन्य विषयों की पठन-सामग्री को पढ़ने की योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे।

[illegible] पर [illegible] सस्वर वाचन एक महत्वपूर्ण सोपान है क्योंकि बालक/बालिकाएं इस समय पहली [illegible] पूर्ण [illegible] के पठन से परिचित होते हैं। पठन के बीच बीच में प्रश्न पूछकर ज्ञात करें कि बच्चे [illegible] पढ़ रहे हैं। [illegible] बीच में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक बच्चे को पाठ का अंश पढ़ने का अवसर दें। पाठ में दिए चित्रों पर विविध प्रश्न पूछें और पाठ में वर्णित घटनाओं [illegible] उनका संबंध स्थापित करें।

पाठ पर आधारित विशिष्ट प्रकार के प्रश्न पूछकर इस सस्वर पठन को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए उनसे कहा जा सकता है कि वह पंक्ति पढ़ो जिसमें बताया गया है कि कबूतर [illegible] आराम [illegible] थे अथवा वे पंक्तियाँ पढ़ो जिनमें बताया गया है कि कबूतर नीचे उतरने लगे [illegible] आदि। बच्चों को उचित विराम और स्वर के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। बीच बीच में [illegible] शैली में संवाद पढ़ने और अभिनयात्मक ढंग से पढ़ने पर भी बल दें।

4. पढ़ने की कुशलताओं का विकास : बच्चों को अधिक गति से और अधिक सरलता से पढ़ना सीखने में सहायता देने के लिए कुछ विशेष प्रकार की कुशलताओं को सुव्यवस्थित ढंग से विकसित करना आवश्यक होता है। सामान्य रूप से ये कुशलताएं दो प्रकार की होती हैं - अर्थ-ग्रहण और शब्द-बोध। शिक्षकगण प्रत्येक पाठ के अंत में दिए हुए अभ्यासों तथा अभ्यास-पुस्तिका में दिए गए अभ्यास, अध्यापन संकेतों की मदद से कराएं और देखें कि बच्चों ने उन्हें कितनी सावधानी से और कहाँ तक [illegible] किया है। इनके अतिरिक्त शिक्षक/शिक्षिकाएं स्वयं ऐसे अभ्यास तैयार करें जो बच्चों में पढ़ने की अपेक्षित कुशलताएँ विकसित करने में सहायक हों। शब्द-बोध के लिए कार्ड बनाएँ और विभिन्न क्रियाकलापों में इनका उपयोग करें। वाक्य-पट्टियों तथा चित्र कार्डों का भी प्रयोग करें।

5. अनुभव-विस्तार के क्रियाकलाप : बच्चों द्वारा पाठ या कहानी का समझ के साथ पठन पूरा हो जाने के बाद भी उनके ज्ञान तथा अनुभव में विस्तार की अनेक संभावनाएँ रहती हैं। शिक्षक को इन संभावनाओं की पहचान कर उनका लाभ उठाने का प्रयत्न करना होगा। उदाहरण के लिए कबूतर, गिलहरी आदि के बारे में बच्चे पाठ पढ़ चुके हैं। चर्चा के माध्यम से उन्हें चिड़ियों, उनकी आदतों, उनके भोजन, उनके रहने के स्थान आदि की जानकारी कराई जा सकती है जिसका संबंध विशेष रूप से विज्ञान विषय से है। गिलहरी के बारे में चर्चा के साथ पेड़ पर या झाड़ियों में रहने वाले अन्य जीव-जंतुओं की जानकारी कराई जा सकती है। ***दाँतों की सफ़ाई*** पाठ से भोजन के पोषक तत्वों, भोजन के बारे में सावधानियों आदि की चर्चा करते हुए स्वास्थ्य रक्षा, स्वच्छता के महत्व आदि का ज्ञान कराया जा सकता है। भाषा-शिक्षक को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि भाषा में विभिन्न विषयों से संबंध जोड़ने की अधिकाधिक संभावनाएँ हैं।

सुव्यवस्थित पाठ योजना के अनुसार शिक्षण करने के साथ ही शिक्षक/शिक्षिका को इस प्रकार के क्रियाकलाप कराने के संबंध में निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का समुचित विकास हो सके। इस दृष्टि से पाठों में दी गई कहानियों, संवादों आदि का अभिनय कराना उचित होगा। उदाहरण के लिए ***कबूतर और जाल, चींटी और हाथी, आसमान गिरा, नन्ही बुलबुल, हंस किसका*** आदि पाठों के अंशों या पूरे पाठ का अभिनय कराया जा सकता है।

शिक्षक पाठों के संदर्भ में यह ध्यान रखें कि यथासंभव वस्तुओं आदि को वास्तविक रूप में कक्षा में दिखाएँ और यदि यह संभव न हो तो जीव-जंतुओं, वस्तुओं आदि के मॉडल या चित्रों का प्रयोग करें। बच्चों से सरल बनाकर क्रियाएँ कराने से वे उनमें सक्रिय होकर रुचिपूर्वक भाग लेंगे।

ये खेल आदि मनोरंजन होने के साथ ही बच्चों का भाषा ज्ञान बढ़ाने में सहायक होते हैं। खेल, पहेलियाँ बुझाना, चुटकुले सुनाना, समूहगान, क्रियागान, कागज़, मिट्टी या लकड़ी से खिलौने बनाना, चित्र बनाना आदि क्रियाओं से कक्षा में कम बोलने वाले बच्चे भी प्रोत्साहित होते हैं और उनमें भाग लेने के लिए उत्सुक रहते हैं।

इस प्रकार की क्रियाएँ कराते समय बच्चों के उच्चारण की ओर विशेष रूप से ध्यान दें। यदि कुछ ध्वनियों के उच्चारण में सूक्ष्म भेद को स्पष्ट नहीं किया गया और पर्याप्त अभ्यास नहीं कराया गया तो बच्चों के उच्चारण में कमियाँ रह जाती है। अतः कुछ विशिष्ट ध्वनियो, जैसे ***इ-ई, ए-ऐ, ओ-औ, क-ख, ण-न, श-स, व-ब, छ-क्ष, द-ध*** आदि के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। इस पुस्तक में संयुक्ताक्षरों का विशेष ज्ञान कराया गया है। बच्चों को उनके उच्चारण और लिखित रूप का बार-बार अभ्यास कराएँ।

प्रारंभिक कक्षाओं में अक्षरों की बनावट तथा सुंदर लिखावट की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। एक बार लिखावट दृढ़ हो जाने पर उसमें सुधार लाना कठिन होता है, अतः इस कक्षा में बच्चों का ध्यान सुंदर और सुडौल अक्षर लिखने की ओर आकर्षित करें। वे छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख सकें, प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखकर दे सकें तथा किसी परिचित विषय पर पाँच-छह वाक्य लिख सकें -- इस योग्यता का विकास दूसरी कक्षा के अंत तक अवश्य हो जाना चाहिए।

पाठ पढ़ाते समय बीच-बीच में बच्चों से कहानी से संबंधित प्रश्न भी पूछने चाहिए जिससे पाठ के संबंध में उनकी उत्सुकता बनी रहे और वे उसके शेष भाग को पढ़ने में रुचि ले सकें। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कविता की लय और तान से परिचित कराना है न कि उसका अर्थ समझाना। जहाँ कहीं कविता का भाव बच्चों को स्पष्ट न हो वहाँ प्रश्नोत्तर द्वारा उसे स्पष्ट करें। पाठ्य पुस्तक में दी गई कविताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य कविताएँ भी कंठस्थ करवाएँ। कविता याद करने तथा सुनाने के लिए है। इससे संबंधित कोई भी प्रश्न लिखित परीक्षा में न पूछा जाए। बच्चे व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक रूप में उचित भाव-भंगिमा के साथ कविता गाएँ।

पाठ के अंत में दिए गए अभ्यासों की भाँति कुछ अन्य अभ्यास भी करवाए जा सकते है जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का विकास हो सके। इस दृष्टि से इस पुस्तक के साथ अभ्यास-पुस्तिका का भी निर्माण किया गया है जिसमें प्रत्येक अभ्यास के उद्देश्य स्पष्ट रूप से लिखे गए हैं। जिन बच्चों को किसी विशेष कुशलता को ग्रहण करने में कठिनाई हो, उन्हें उसी प्रकार के अतिरिक्त अभ्यास देकर कुशलता को दृढ़ करें। अभ्यास-पुस्तिका के प्रयोग से बच्चों की भाषा-योग्यताओं के विकास में विशेष सहायता मिल सकेगी।

□□

विषय-सूची

1. प्यारा भारत

यहीं हिमालय-सा पहाड़ है
यहीं गंग की धारा है
यमुना लहराती है सुंदर
भारत कितना प्यारा है!

फल-फूलों से भरी भूमि है
खेतों में हरियाली है
आमों की डालों पर बैठी
गाती कोयल काली है।

अध्यापन संकेत : कविताएँ गाने और याद करने के लिए हैं। आप स्वयं कविता को कई बार उचित लय, तान और भाव-भंगिमा से पढ़ें। बच्चे सुनें और दोहराएँ। बार-बार कविता सुनाएँ और सुनें। इस प्रकार पूरी कविता याद कराएँ। पाठ्य पुस्तक की सभी कविताएँ इसी प्रकार कराएँ। कविता के अर्थ को केवल सरल प्रश्नों द्वारा ही स्पष्ट करें। सीधे-सीधे पंक्तियों के अर्थ न बताएँ। बच्चों का ध्यान उन शब्दों की ओर आकर्षित करें जिनकी तुक मिलती हो जैसे — *धारा प्यारा, बनाया-खाया* आदि। प्रश्नों के माध्यम से कविता के मूल भाव पर ध्यान दिलाते हुए देश की सुंदरता का बोध कराएँ और अपनी मातृभूमि से प्रेम करने की भावना जाग्रत करें।

बच्चो, माँ ने पाल-पोसकर
तुमको बड़ा बनाया है
लेकिन यह मत भूलो तुमने
अन्न कहाँ का खाया है!

तुमने पानी पिया कहाँ का
खेले मिट्टी में किसकी
चले हवा में किसकी बोलो
बच्चो, प्यारे भारत की।

❑गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश'

बताओ

(क) हमारे देश का क्या नाम है?

(ख) यहाँ कौन-कौन सी नदियाँ हैं?

(ग) आपको अपना देश क्यों अच्छा लगता है?

पूरा करो

1. यहीं हिमालय-सा पहाड़ है
   यहीं गंग की ----------
   यमुना लहराती है सुंदर
   ---------- प्यारा है!
2. आमों की डालों पर ----
   ---------- काली है।

याद करो

इस कविता को याद करो।

पढ़ो और समझो

भूमि = ज़मीन	अन्न = अनाज
गंग = गंगा, एक नदी का नाम	यमुना = एक नदी का नाम

2. कबूतर और जाल

पीपल	कबूतर	भोजन	धरती
चिल्लाना	बहेलिया	ज़ोर	इशारा
मित्र	उन्हें	उन्होंने	धन्यवाद

जंगल में पीपल का एक पेड़ था। पेड़ पर बहुत से कबूतर रहते थे। कबूतर दिन भर भोजन की खोज में घूमते रहते। रात होने पर वे सब पीपल के पेड़ पर लौट आते।

एक दिन की बात है। कबूतर भोजन की खोज में गए। थोड़ी दूर उड़ने पर एक छोटा कबूतर बोला,

---

अध्यापन संकेत : हाव-भाव तथा स्वर के उतार-चढ़ाव द्वारा, अभिनयात्मक ढंग से कहानी सुनाएँ। पाठ में आए नए शब्दों का प्रयोग कहानी कहते समय करें। इस पाठ में कुछ संयुक्तव्यंजनों का प्रयोग है जिन्हें पहले व्यंजन की पाई हटाकर, दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ा गया है जैसे - *ल्ल*, *न्य*, *न्ह*। इन संयुक्तव्यंजनों से बनने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर, इनका उच्चारण करवाएँ। संयुक्तव्यंजन के लिखित रूप पर ध्यान दिलाएँ। इसमें दो आगत ध्वनियों ज़ और फ़ का भी प्रयोग है। ज और फ से इनका अंतर स्पष्ट करने के लिए *जलेबी-ज़मीन*, *फल-साफ़* जैसे शब्दों के उदाहरण दें। ड और ड़, ढ और ढ़ ध्वनियों के उच्चारण और लिखित रूप का अंतर

''देखो, उधर देखो। कितना दाना बिखरा पड़ा है! धरती पर कितना दाना बिखरा पड़ा है!''

सभी कबूतर उधर देखने लगे। उन्हें धरती पर बहुत-सा दाना दिखाई पड़ा। वे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।

तभी एक बूढ़ा कबूतर बोला, ''ठहरो, ठहरो!

स्पष्ट करें। इनका बार-बार उच्चारण करवाएँ तथा लिखवाएँ। ड़ और ढ़ शब्द के शुरू में नहीं आते। चर्चा के माध्यम से ध्यान दिलाएँ : मिलजुल कर करने से सभी काम आसान हो जाते हैं। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। हमें बड़ों का कहना मानना चाहिए। कहानी का अभिनय करवाएँ। रस्सी या सुतली को जाल की तरह फैलाकर, बच्चों को कबूतर बनाएँ। ध्यान रखें कि कक्षा के सभी बच्चे इस तरह के क्रियाकलापों में भाग लें।

अभी वहाँ मत जाओ। जंगल में इतना दाना कहाँ से आया?''

दूसरा कबूतर बोला, ''कहीं से भी आया हो। आओ, हम सब मिलकर दाना खाएँ।''

कबूतर धरती पर उतरने लगे। वे दाना चुगने लगे। पर बूढ़ा कबूतर उनके साथ नहीं गया। वह दूर से ही देखता रहा। कबूतरों ने पेट भर दाना खाया। अब वे उड़ना चाहते थे, पर उड़ न सके। वे जाल में फँस गए थे।

कबूतर चिल्लाने लगे, ''बचाओ, बचाओ। हम जाल में फँस गए हैं।''

तभी एक कबूतर चिल्लाया, ''उधर देखो, अरे, वह तो बहेलिया है। वह हमें पकड़ने आ रहा है।''

बूढ़ा कबूतर बोला, ''घबराओ मत। सब मिलकर ज़ोर लगाओ। जाल को लेकर एक साथ उड़ चलो।''

सभी कबूतरों ने मिलकर ज़ोर लगाया। जाल कुछ ऊँचा उठा। कबूतरों ने और ज़ोर लगाया।

अब कबूतर जाल लेकर उड़ने लगे। बूढ़ा कबूतर आगे-आगे उड़ रहा था। सब कबूतर उसके पीछे थे।

बूढ़ा कबूतर उन्हें लेकर बहुत दूर उड़ गया। उसने एक पेड़ की तरफ़ इशारा किया। वह बोला, ''यहाँ एक चूहा रहता है। वह मेरा मित्र है। वह हमारी मदद करेगा। यहीं उतर जाओ।''

बूढ़े कबूतर ने चूहे को बुलाया। चूहे ने जाल काट दिया। कबूतर जाल से निकल आए। उन्होंने चूहे को धन्यवाद दिया।

पढ़ो और बताओ, कौन-कौन सी बात सही है?

(क) बूढ़ा कबूतर बोला, "चूहा मेरा मित्र है।"

(ख) जंगल में नीम का एक पेड़ था।

(ग) बूढ़ा कबूतर चतुर था।

(घ) कबूतर जाल में फँस गए।

(ङ) पेड़ के नीचे कबूतर रहते थे।

वाक्य पूरे करो

दाना धरती मदद पीपल जाल

1. कबूतर ———— के पेड़ पर रहते थे।
2. बहुत-सा दाना ———— पर बिखरा था।
3. जंगल में इतना ———— कहाँ से आया?
4. कबूतर ———— में फँस गए थे।
5. चूहा हमारी ———— करेगा।

वाक्य बनाओ

कबूतर	जाल काट दिया।
चूहे ने	आगे-आगे उड़ रहा था।
कबूतरों ने	पीपल के पेड़ पर रहते थे।
बूढ़ा कबूतर	चूहे को धन्यवाद दिया।

पढ़ो और लिखो

पिल्ला गुल्ली बिल्ली चिल्लाना

नन्हा इन्हें उन्हें उन्होंने

कन्या न्याय धन्य धन्यवाद

पढ़ो

ज = जाल जवाब राजा

ज़ = ज़मीन कागज़ दरवाज़ा

फ = फल फूल मूँगफली

फ़ = तरफ़ सफ़ाई माफ़

ड़ = पेड़ बड़ा लड़का

ढ़ = पढ़ना बूढ़ा चढ़ना

3. गिलहरी

अचानक	पत्थर	प्यारी	भाइयों
मूँगफली	कुतर	शरीर	धारियाँ
मुलायम	फुरतीली	चमकीली	रुक

रमेश और सुधीर दो भाई थे। एक दिन वे पेड़ के नीचे खेल रहे थे। अचानक सुधीर बोला, ''भैया! वह देखो, गिलहरी।'' यह कहकर सुधीर ने पत्थर उठा लिया।

रमेश ने कहा, ''नहीं, नहीं। पत्थर मत मारो। गिलहरी किसी को नहीं काटती। देखो! कितने मज़े

अध्यापन संकेत: नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण कराएँ। *रुकना, रुपया, रुई* – शब्दों में र के साथ उ की मात्रा का प्रयोग है। इन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर र में उ की मात्रा (ु) के लिखित रूप की ओर ध्यान दिलाएँ। अन्य व्यंजनों में उ की मात्रा नीचे लगती है — इस अंतर को स्पष्ट करें। इस पाठ में घुंडी हटाकर बनने वाले संयुक्तव्यंजन का प्रयोग है जैसे— *क्या*। *क* को दूसरे व्यंजन से संयुक्त करते समय इसकी घुंडी को हटा देते हैं। जैसे - *क्या, वाक्य, क्यारी* शब्दों में। इनका उच्चारण कराएँ और इन्हें लिखवाएँ। *सुंदर, मूँगफली* आदि शब्दों में अनुस्वार और अनुनासिक (चंद्र बिंदु) का उच्चारण स्पष्ट रूप से करें। *नहीं, मैं, फेंकी*, हैं आदि शब्दों में अनुनासिक (ँ) उच्चारण है यद्यपि लिखने में अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है क्योंकि मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लिखी होने के कारण अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लिखने की छूट है। चर्चा द्वारा ध्यान दिलाएँ: हमें जीवों से प्यार करना चाहिए। उन्हें सताना नहीं चाहिए।

से कुतर-कुतर कर बेर खा रही है! कितनी प्यारी है! चलो, उसके पास चलें।''

सुधीर बोला, ''अरे! यह तो पेड़ पर चढ़ गई।''

रमेश ने कहा, ''गिलहरी को फल बहुत अच्छे लगते हैं। इसे मूँगफली भी बहुत अच्छी लगती है। अगर इसे मूँगफली दें तो यह हमारे पास आ जाएगी।''

सुधीर ने एक मूँगफली गिलहरी को दिखाकर फेंकी। गिलहरी बड़ी तेज़ी से नीचे उतरी। वह मूँगफली उठाकर पेड़ की डाल पर चढ़ गई और कुतर-कुतर कर मूँगफली खाने लगी।

रमेश बोला, ''देखो, गिलहरी के शरीर पर कितनी सुंदर धारियाँ हैं। इसके बाल बड़े मुलायम होते हैं।''

सुधीर ने कहा, ''भैया, यह गिलहरी बहुत सुंदर है। आओ, इसे पकड़ें। मैं इसे घर ले जाऊँगा।''

रमेश बोला, ''सुधीर, गिलहरी बड़ी फुरतीली होती है। इसे पकड़ना आसान काम नहीं। ज़रा सी आवाज़ होते ही यह पेड़ पर चढ़ जाती है।''

सुधीर ने पूछा, ''क्या गिलहरियाँ पेड़ पर रहती हैं?''

रमेश ने उत्तर दिया, ''हाँ, गिलहरियाँ पेड़ पर ही रहती हैं। वही उनका घर होता है।''

इतने में गिलहरी फिर पेड़ से उतरी। वह एक जगह रुक गई। अपनी चमकीली आँखों से वह दोनों भाइयों को देखने लगी। सुधीर उसे पकड़ने दौड़ा। गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ गई।

सुधीर देखता ही रह गया।

बताओ

(क) गिलहरी कहाँ रहती है?

(ख) गिलहरी क्या-क्या खाती है?

(ग) सुधीर ने पत्थर क्यों उठाया?

(घ) सुधीर गिलहरी को क्यों नहीं पकड़ पाया?

पढ़ो और बताओ

लड़की	लड़कियाँ
नदी	नदियाँ
धारी	------
बकरी	------
गिलहरी	------

पढ़ो और लिखो

प्यारा	प्यास	प्याऊ
उत्तर	पत्ती	कुत्ता
पत्थर	कत्था	हत्था
क्या	क्यारी	क्यों
रुकना	रुपया	रुई

वाक्य पूरे करो

पेड़ फुरतीली तेज़ी मूँगफली धारियाँ

1. गिलहरी बड़ी ———— से नीचे उतरी।
2. गिलहरी को ———— अच्छी लगती है।
3. गिलहरी के शरीर पर ———— होती हैं।
4. गिलहरी बड़ी ———— होती है।
5. गिलहरी ———— पर रहती है।

4. बकरी का बच्चा और भेड़िया

बच्चे	बच्चों	शैतान	पत्तियाँ	भेड़िया
शिकारी	कुत्ते	कोशिश	तुम्हें	अच्छा

एक बकरी थी। बकरी के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ-साथ रहते थे। जहाँ वह जाती, बच्चे भी उसके साथ जाते।

एक दिन बकरी ने बच्चों से कहा, ''आज मैं जंगल से घास लाने जा रही हूँ। तुम घर पर ही रहना। बाहर मत जाना।''

बकरी का छोटा बच्चा बहुत शैतान था। वह चुपके से माँ के पीछे-पीछे चला गया। जंगल के पास एक नाला था। नाले के किनारे हरी-हरी झाड़ियाँ थीं। वह

अध्यापन संकेत : [illegible] पाठ में [illegible] का कई बार प्रयोग हुआ है। [illegible] और [illegible] वाले शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर [illegible] के उच्चारण के अंतर को स्पष्ट करें। [illegible] में ऊ की मात्रा ( ) नीचे न लगाकर, [illegible] शब्दों में इसका लिखित रूप दिखाएं तथा लिखने का अभ्यास [illegible] का अंतर बोलने और लिखने में स्पष्ट करें।
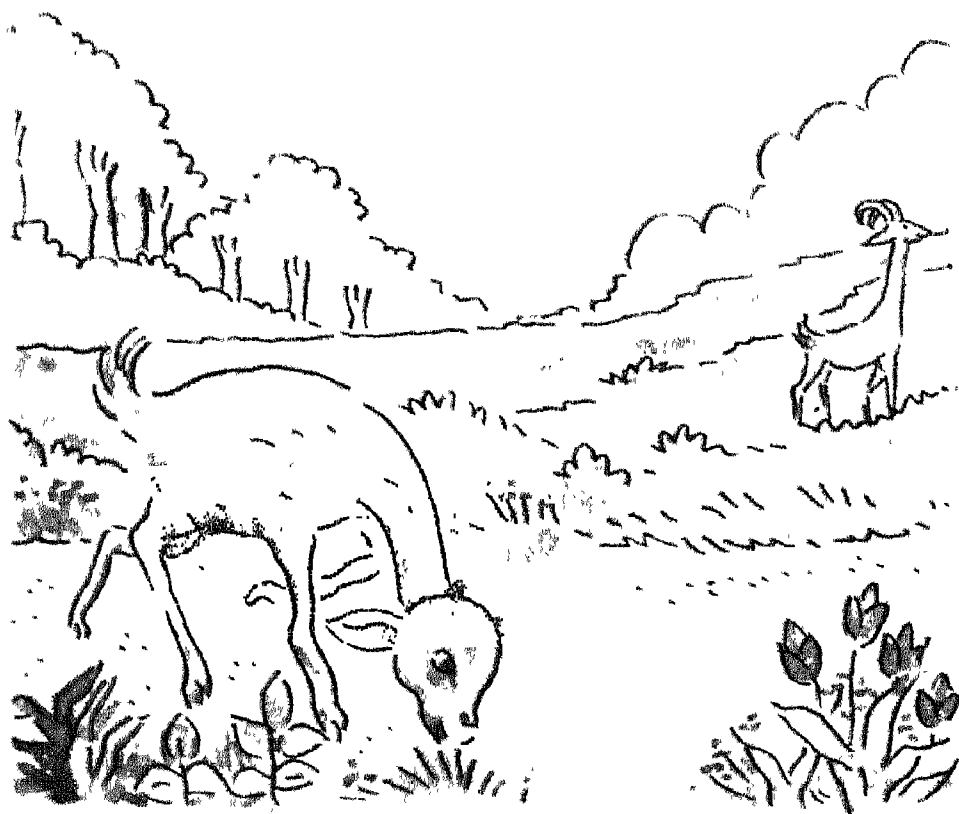
वहाँ पत्तियाँ खाने लगा। बकरी आगे निकल गई।

नाले के किनारे एक भेड़िया पानी पी रहा था। उसने दूर से बकरी के बच्चे को देखा। भेड़िए ने सोचा– अहा! बकरी का बच्चा! आज मैं इसे ज़रूर खाऊँगा। वह धीरे-धीरे उसके पास गया और बोला, ''कहो बेटे, क्या कर रहे हो?''

बकरी के बच्चे ने ऊपर देखा। भेड़िए को देखकर

वह बहुत डर गया। वह कुछ भी न बोल सका।

भेड़िया फिर बोला, ''खाओ, खाओ, खूब खाओ। मुझे भी बहुत दिन से खाने को कुछ नहीं मिला। आज मैं तुम्हें खाऊँगा।''

बकरी का बच्चा डरते-डरते बोला, ''भेड़िए मामा, मैं तो अभी बहुत छोटा हूँ।''

भेड़िया बोला, ''मुझे बकरी के छोटे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं।''
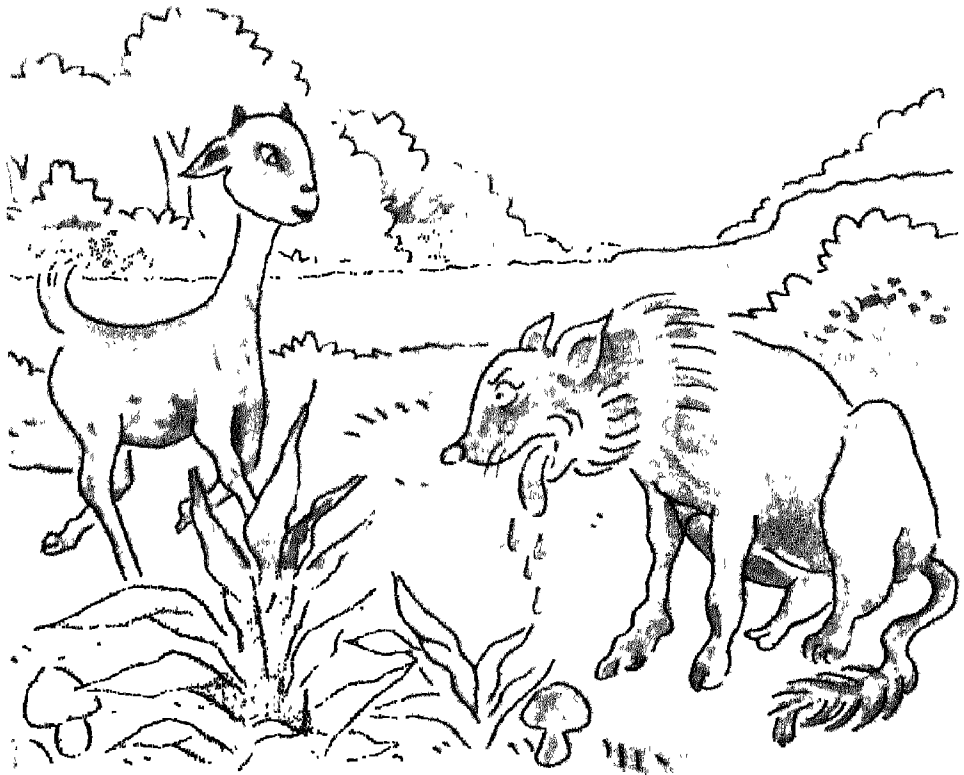
बकरी का बच्चा कुछ सोचने लगा। फिर बोला, ''मामा, पहले मुझे एक गाना सुना दो। फिर मुझे खा लेना।''
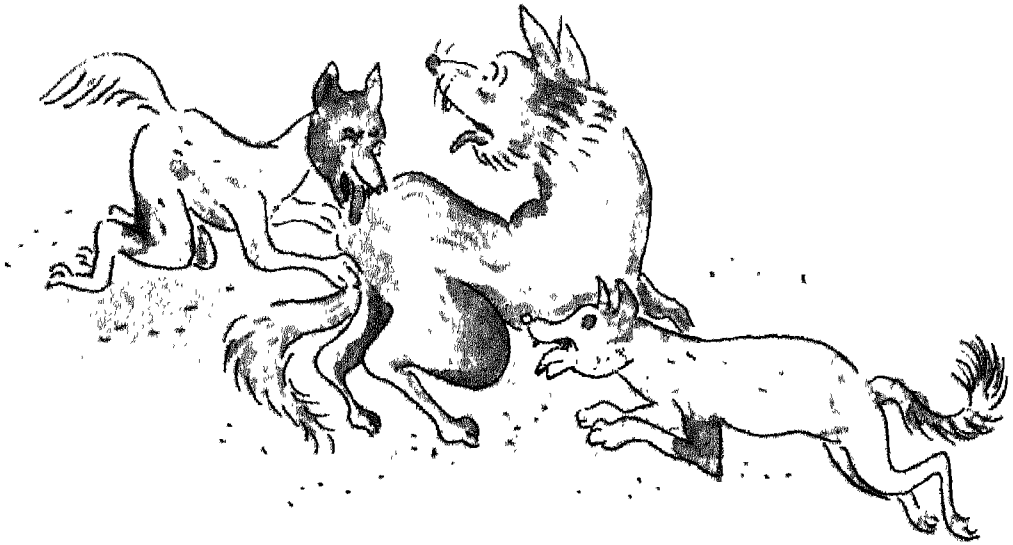
भेड़िया बोला, ''गाना! मुझे गाना नहीं आता।''

बकरी के बच्चे ने फिर कहा, ''मेरी माँ तो कहती है, भेड़िया मामा बहुत अच्छा गाते हैं।''

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ। वह ऊँची आवाज़ में गाने लगा। कुछ दूरी पर शिकारी कुत्ते

जा रहे थे। कुत्तों ने भेड़िए की आवाज़ सुनी। वे सब नाले की ओर दौड़ पड़े।

भेड़िया आँखें बंद किए गा रहा था। इतने में कुत्ते वहाँ आ पहुँचे। भेड़िया घबरा गया। उसने भागने की कोशिश की। पर कुत्तों ने भेड़िए को पकड़ लिया।

बकरी का बच्चा तेज़ी से घर भाग गया।

बताओ

1. बकरी जंगल में क्यों गई?
2. बकरी के बच्चे को नाले पर कौन मिला?
3. बकरी का बच्चा क्यों डर गया?
4. भेड़िए के गाना गाने पर क्या हुआ?
5. बकरी का बच्चा तुम्हें कैसा लगा?

पढ़ो, समझो और लिखो

(क)	पढ़	पढ़ो	पढ़ें	(ख)	बेटा	बेटी
	देख	------	------		दादा	------
	कह	------	------		मामा	------
	आ	आओ	आएँ		लड़का	------
	खा	------	------		चाचा	------
	गा	------	------		नाना	------

वाक्य पूरे करो

1. बकरी के दो ---------- थे। (बच्चे/बच्चा)
2. भेड़िए की आवाज़ सुनकर ---------- दौड़ पड़े। (कुत्ते/कुत्ता)
3. जंगल के पास ---------- था। (नाला/नाले)
4. ---------- पानी पी रहा था। (भेड़िया/भेड़िए)

पढ़ो और समझो

(क) सच्चा बच्चा पच्चीस च् + च = च्च

पत्ती गत्ता छत्ता त् + त = त्त

अच्छा मच्छर गुच्छा च् + छ = च्छ

तुम्हारा कुम्हार तुम्हें म् + ह = म्ह

(ख) उ ु दुकान तुम दुनिया खुश

ऊ ू दूर बूढ़ा जादू सूई

उ ु रुई रुकना रुपया गुरुजी

ऊ ू रूमाल रूठना शुरू ज़रूर

5. पाँच मिनट में

नाश्ता दुकान अध्यापक समाप्त स्कूल
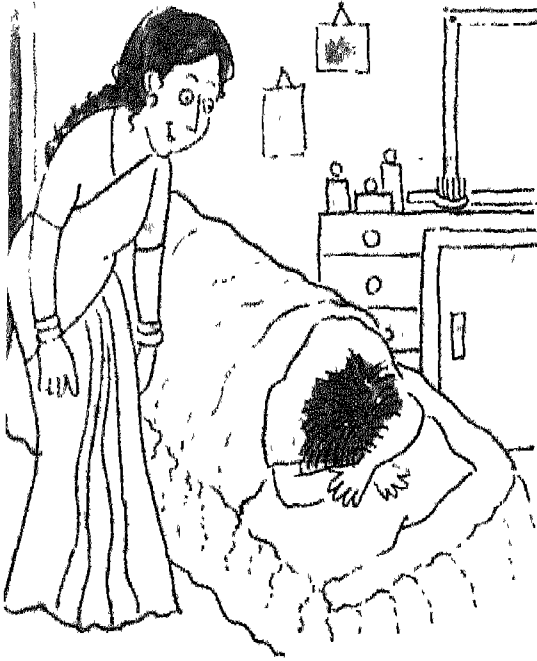
एक लड़का था – गोपी। गोपी की माँ रोज़ सुबह उसे जगाती। वह आँखें बंद किए कहता, ''पाँच मिनट में उठता हूँ।'' पर वह फिर सो जाता।

माँ नहाने के लिए कहती तो गोपी बोलता, ''पाँच मिनट में नहाता

अध्यापन संकेत : इस पाठ में पाई (ा) हटाकर बनने वाले दो प्रकार के संयुक्तव्यंजन सिखाए गए हैं जैसे *ध्य, प्त, स्क, श्त। ध्यान, समाप्त, स्कूल, नाश्ता, ग्यारह* आदि शब्द श्यामपट पर लिखकर समझाएं कि *स्क, ध्य* और *प्त* को संयुक्त रूप में लिखते समय *स, ध* और *प* से जुड़ी खड़ी लाइन हटा दी गई है परंतु *श्त* और *ग्य* में *ग* और *श* का पिछला भाग (ा) जो वास्तव में पाई ही है, हटाया गया है। इसी प्रकार पाठ के अन्य शब्दों को पढ़ने और लिखने का अभ्यास कार्डों द्वारा करवाएँ। कक्षा में अभिनय कराएं। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाएं कि सभी काम समय पर करने चाहिए।

हूँ।'' पर वह खेलता ही रहता। जब माँ नाश्ता करने को कहती तो गोपी कहता, ''पाँच मिनट में।''

पाँच मिनट - पाँच मिनट करते-करते गोपी रोज़ स्कूल देर से पहुँचता। अध्यापक समझाते – स्कूल

समय पर आया करो। गोपी अपनी आदत के कारण कुछ न सुनता। कक्षा में भी वह अपना काम समय पर पूरा न कर पाता। दूसरे बच्चे काम समाप्त करके खेलने चले जाते, गोपी वहीं बैठा रहता।

एक दिन स्कूल में जादू का खेल दिखाया जाना था। अध्यापक ने बच्चों को सुबह दस बजे आने के लिए कहा।

बच्चे समय पर स्कूल पहुँच गए। कुछ बच्चों को थोड़ी देर हो गई थी। वे भागते हुए स्कूल जा रहे थे।

गोपी घर के बाहर खेल रहा था। एक बच्चा बोला, ''गोपी देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो। जादू का खेल शुरू हो जाएगा।''

गोपी बोला, ''तुम चलो, मैं पाँच मिनट में आता हूँ।''

पाँच मिनट करते-करते गोपी को बहुत देर हो गई।

जब गोपी स्कूल पहुँचा तो खेल समाप्त हो चुका था। सभी बच्चे जादू के खेल की बातें करते हुए लौट रहे थे। वे बहुत खुश थे।

गोपी उदास खड़ा सबकी बातें सुनता रहा।

बताओ, किसने कहा? कब कहा?

1. अभी पाँच मिनट में उठता हूँ।
2. देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो।
3. तुम चलो, मैं पाँच मिनट में पहुँचता हूँ।
4. स्कूल समय पर आया करो।

पढ़ो और समझो

ध्यान	अध्यापक	अध्यापिका	ध् + य = ध्य
समाप्त	गुप्त	सप्ताह	प् + त = प्त
नाश्ता	रिश्ता	कुश्ती	श् + त = श्त

वाक्य बनाओ

गोपी माँ बच्चे स्कूल	समय पर स्कूल पहुँच गए। समय पर आया करो। एक लड़के का नाम था। रोज़ सुबह गोपी को जगाती।

लिखो

गोपी कैसा लड़का था? तुम गोपी की जगह होते तो क्या करते?

6. छोटी सी चीज़
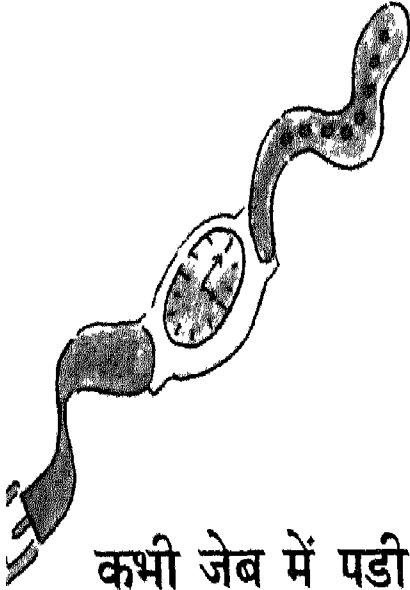
छोटी सी हूँ लेकिन फिर भी
बड़े काम की मानी जाती
सदा समय की पाबंदी मैं
रखना सबको हूँ सिखलाती।

कभी जेब में पड़ी ठुमकती
कभी कलाई पर बँध जाती
कभी मेज़ पर बैठ ठाठ से
टिक-टिक टिक-टिक राग सुनाती।
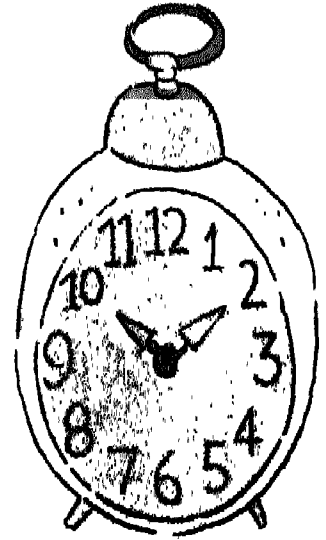
अध्यापन संकेत : कविता को लय और तान के साथ दो-तीन बार पढ़िए और बच्चों को सुनाइए। बच्चे पुस्तक बंद रखकर कविता का आनंद लें। घड़ी की उपयोगिता बताते हुए समयपालन पर चर्चा करें। अलग-अलग तरह की घड़ियाँ दिखाएँ तथा उनके चित्र बनवाएँ।

छोटी हूँ पर घंटाघर के
ऊपर होती बहुत बड़ी हूँ
सोच रहे होगे – मैं क्या हूँ
मैं तो केवल एक घड़ी हूँ।
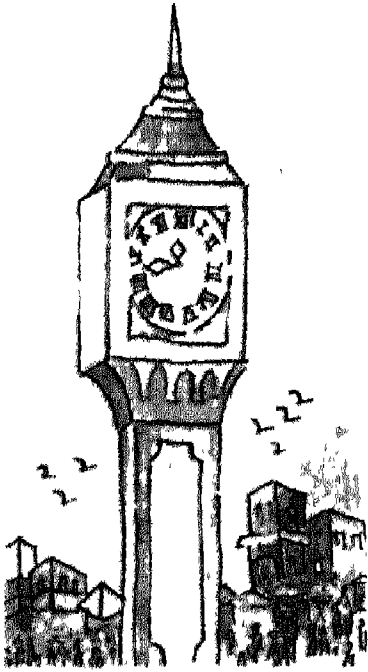
अच्छा मुझे नहीं लगता है
पलभर भी रुकना-सुस्ताना
अच्छा मुझे बहुत लगता है
चलना, बस चलते ही जाना।

❑ दामोदर अग्रवाल

याद करो

इस कविता को याद करो।

पूरा करो

1. छोटी सी हूँ लेकिन फिर भी

____

____

रखना सबको हूँ सिखलाती।

2. अच्छा मुझे नहीं लगता है

____

अच्छा मुझे बहुत लगता है

____

बताओ

(क) घड़ी को क्या अच्छा नहीं लगता?

(ख) घड़ी हमें क्या सिखाती है?

7. चींटी और हाथी

चींटी	परिवार	पेड़-पौधों	दुखी	ज़्यादा
सूँड़	मौज	दशा	परेशान	कमज़ोर कुचल

एक चींटी थी। वह रोज़ सुबह भोजन की तलाश में चल पड़ती थी। परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे-पीछे चलतीं।

वहीं एक हाथी रहता था। वह दिनभर इधर-उधर घूमता रहता। जंगल के पेड़-पौधों को तोड़ता। कभी-कभी हाथी अपनी सूँड़ में पानी भरकर लाता और जानवरों पर डाल देता। जंगल के जानवर उससे बहुत परेशान रहते।

अध्यापन संकेत : कहानी में आए पात्रों – चींटी और हाथी के बारे में बातचीत करें। हाव-भाव के साथ कहानी सुनाएं। कठिन शब्दों का उच्चारण करवाएँ तथा वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें। ज़ और फ़ ध्वनियों वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। चींटियों के बारे में कुछ जानकारी दें। हाथी की कोई और कहानी बच्चों से सुनें या स्वयं सुनाएं।
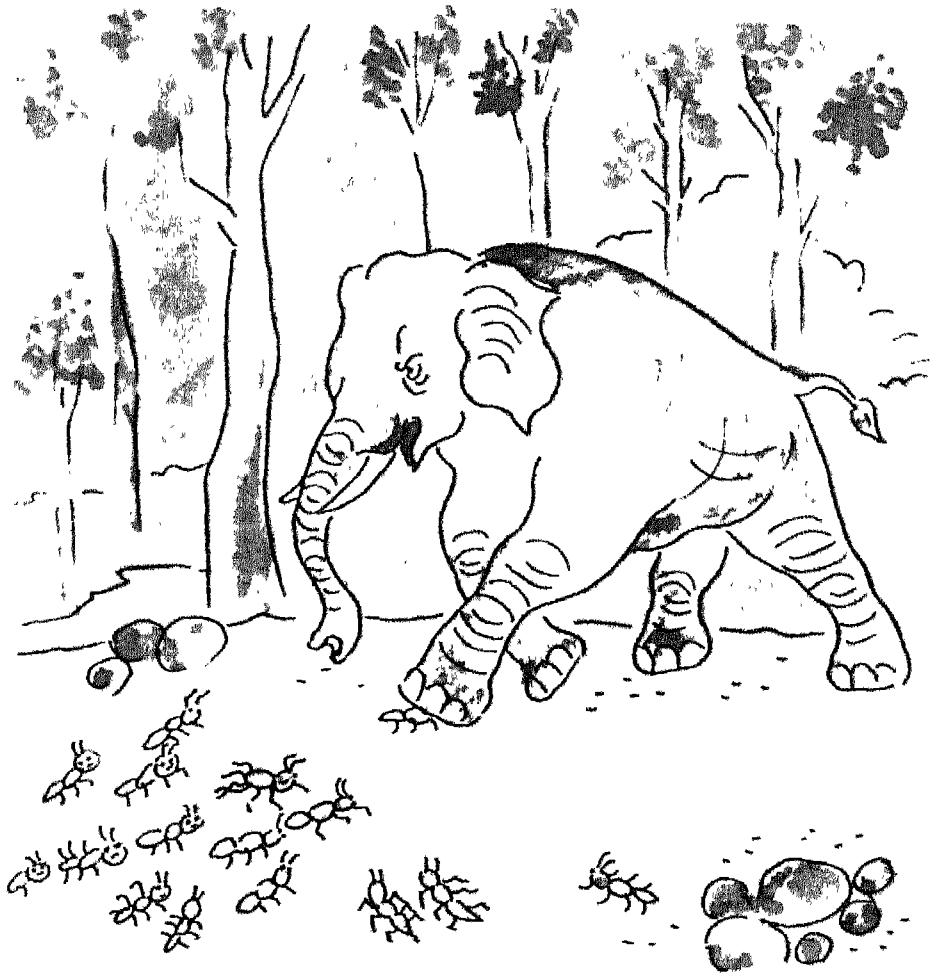
हाथी की एक आदत और भी थी। जहाँ कहीं भी वह चींटियों को देखता, कुचल देता। चींटी यह सब देखती और दुखी होती।

एक दिन चींटी ने हाथी से कहा, ''तुम दूसरों को बहुत सताते हो, यह बात ठीक नहीं।''

हाथी बोला, ''चुप रहो। मैं जो चाहे करूँ। तुम

बहुत छोटी हो। ज़्यादा बोलोगी तो तुम्हें भी कुचल दूँगा।''

चींटी चुप हो गई और घास में जाकर छिप गई।

हाथी इधर-उधर घूम रहा था। तभी चींटी चुपके से उसकी सूँड़ में घुस गई और उसे काटने लगी।

हाथी परेशान होने लगा। उसने सूँड़ को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया। पर उसकी परेशानी किसी तरह भी कम न हुई। तब चींटी बोली, ''परेशान क्यों हो रहे हो? तुम भी तो दूसरों को बहुत सताते हो।''
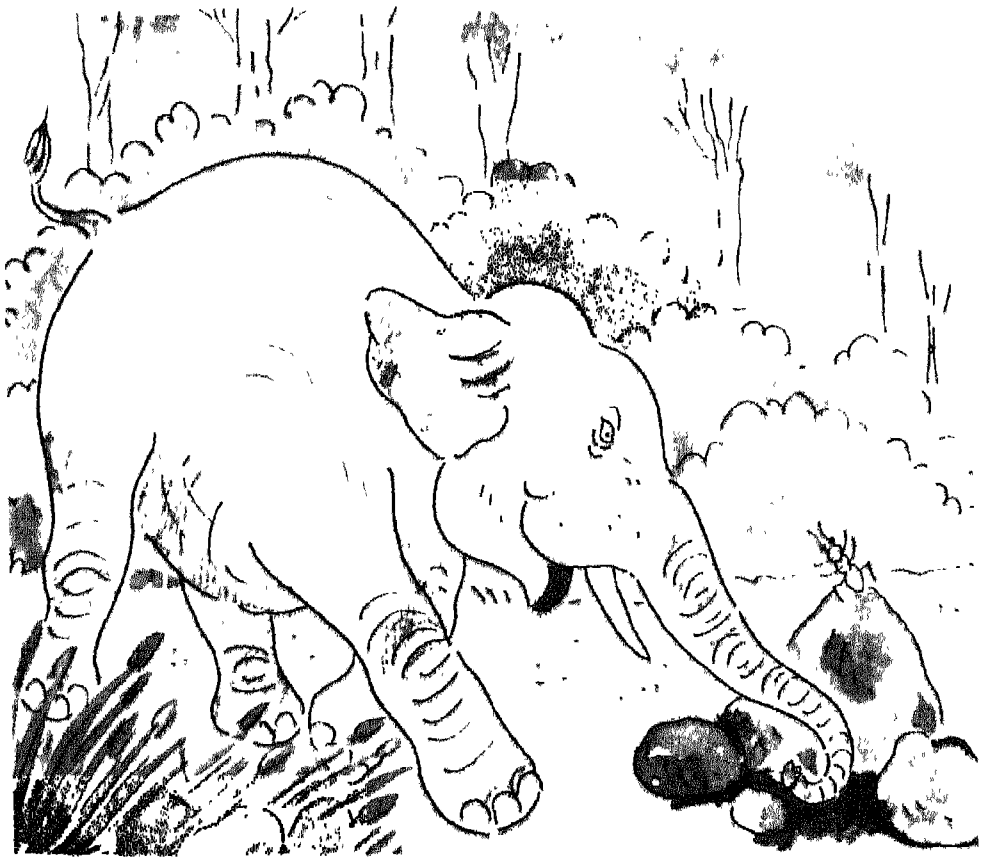
हाथी बहुत दुखी हो गया। वह बोला, ''मुझे माफ़ कर दो। अब मैं किसी को कभी नहीं सताऊँगा।''

चींटी को दया आ गई। वह हाथी की सूँड़ से बाहर

निकल आई। फिर बोली, "किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।"

बताओ, कौन-कौन सी बात सही है?

1. परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे चलतीं।
2. हाथी सभी जानवरों से प्यार करता था।
3. चींटी चुपके से हाथी की सूँड़ में घुस गई।
4. जंगल के जानवर चींटी से परेशान थे।
5. किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।

पढ़ो, समझो और लिखो

कमज़ोर	बलवान	ज़्यादा	कम
भीतर	______	अच्छा	______
दुखी	______	ऊपर	______

वाक्य बनाओ

सूँड़ कमज़ोर अच्छा घास जंगल

8. आम का पेड़

गुठली	मिट्टी	प्रसन्न	वर्षा	प्रिया
वर्ष	ज़रूर	शाखाएँ	तना	प्यार

गरमियों के दिन थे। सौरभ के चाचाजी ने अपने बगीचे के एक टोकरा आम भेजे। आम बहुत मीठे थे। सौरभ को आम बहुत अच्छे लगे। उसने सोचा – ऐसे ही आम मैं अपने बगीचे में लगाऊँगा।

उसने बगीचे में एक जगह थोड़ी मिट्टी खोदी। वहाँ आम की एक गुठली डाल दी। गुठली पर मिट्टी डालकर उसने थोड़ा पानी छिड़क दिया। वह रोज़

अध्यापन संकेत : पाठ में आए कुछ कठिन शब्दों — *मिट्टी*, *वर्षा*, *प्रसन्न*, *प्रिया*, *वर्ष* को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण कराएँ। *मिट्टी*, *चट्टान*, *गुड्डा*, *गड्ढा* आदि शब्दों के उदाहरण देकर समझाएँ कि इनमें ट्ट, ड्ड, ड्ढ हैं। लिखते समय पहले व्यंजन के नीचे हलन्त (्) लगाया गया है। इसके लगने पर आवाज़ हलकी बोली जाती है, जैसे *मिट्टी*, *चिट्ठी*, *इकट्ठा*, *गड्ढा* और *गुड्डा* आदि में। *वर्षा* और *वर्ष* शब्दों में रेफ (र्‍) के रूप में र् का प्रयोग पहली बार आया है। इसके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। बताएँ कि वहाँ र् का उच्चारण कुछ हलका होता है। जिस व्यंजन के ऊपर (र्‍) लिखा रहता है उसे व्यंजन से पहले बोला जाता

सुबह वहाँ पानी डालता। कुछ दिन बीत गए। आम का पौधा नहीं निकला। उसने पानी डालना बंद कर दिया।

एक दिन हलकी-हलकी वर्षा हो रही थी। सौरभ घूमता हुआ बगीचे में उसी जगह पर जा पहुँचा। सामने ही लाल-लाल कोंपलों वाला नन्हा-सा पौधा लगा

है। *गर्व*, *वर्षा*, *सूर्य* आदि के द्वारा पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराएँ। र में जब कोई व्यंजन मिलता है तो र को (,) के रूप में लिखते हैं जैसे, *प्रिया*, *प्रसन्न* में। इनमें प् को पहले और हलका बोला जाएगा और र को बाद में। *प्रेम*, *प्रणाम*, *प्रथम* आदि में *प्र* को बोलने और लिखने का अभ्यास करवाएँ। बातचीत द्वारा ये बातें उभारें पेड़ हमें फल और छाया देते हैं। पेड़ हवा को साफ़ रखते हैं। हमें पेड़-पौधों की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए। स्कूल में कुछ पेड़-पौधे लगवाएँ और बच्चों से उनकी देखभाल करवाएँ।

था। पौधा देखते ही सौरभ प्रसन्न हो उठा। ''पौधा निकल आया, पौधा निकल आया,'' कहते-कहते वह अंदर भागा। अपनी छोटी बहन प्रिया का हाथ पकड़कर उसे बगीचे में ले आया। पौधा देखकर प्रिया भी खुशी से उछल पड़ी।

सौरभ बोला, ''यह पौधा मैंने लगाया है। यह आम का पौधा है। इसमें खूब मीठे आम लगेंगे।''

दोनों भागे-भागे पिताजी के पास गए। पिताजी बोले, ''क्या बात है? आज तुम दोनों बहुत प्रसन्न हो।'' प्रिया बोली, ''पिताजी, बगीचे में आम का पौधा निकल आया है। अगले वर्ष हम अपने ही पौधे के आम खाएँगे।''

उसकी बात सुनकर पिताजी हँसे। वे प्यार से बोले, ''छोटे से पौधे को बड़ा होने में बहुत समय लगेगा। चार-पाँच वर्ष में यह एक बड़ा पेड़ बन जाएगा। इसका तना मोटा होगा। बड़ी-बड़ी शाखाएँ होंगी। तब इसमें आम लगेंगे।''

यह सुनकर प्रिया थोड़ी उदास हो गई। पर सौरभ तुरंत बोला, ''कोई बात नहीं। हम पौधे की देखभाल करेंगे। एक दिन हम इसके फल ज़रूर खाएँगे।''

वाक्य पूरे करो

आम गुठली गरमियों मीठे तना

1. आम ______ में मिलते हैं।
2. आम के पेड़ का ______ बहुत मोटा होता है।
3. आम के बीज को ______ कहते हैं।
4. ______ आम सबको अच्छे लगते हैं।
5. मेरे घर के पास ______ के पेड़ हैं।

पढ़ो, समझो और लिखो

गरमी	सरदी	थोड़ा	बहुत
मीठा	______	अगला	______
छोटा	______	उदास	______
सुबह	______	मोटा	______

पढ़ो और समझो

प्रथम	प्रसाद	प्रेम		प् + र = प्र
गन्ना	अन्न	प्रसन्न		न् + न = न्न
वर्ष				र् + ष = र्ष
सूर्य				र् + य = र्य
पूर्व				र् + व = र्व

पढ़ो और लिखो

पट्टी	छुट्टी	इकट्ठा	चिट्ठी
गन्ना	अन्न	मुन्ना	प्रसन्न
वर्ष	वर्षा	सूर्य	हर्ष

बताओ

1. चाचाजी ने आम कब भेजे?
2. आम के बीज को क्या कहते हैं?
3. आम के पौधे की कोंपलें किस रंग की थीं?
4. सौरभ ने प्रिया को क्या दिखाया?
5. आम का पेड़ कितने वर्षों में फल देता है?

9. फूलकुमारी

हँसने	चिड़ियाँ	मुरझाना	महाराज
मंत्री	इनाम	तमाशेवाला	दाढ़ी

एक था राजा। एक थी रानी। उनकी बेटी थी फूलकुमारी। जब फूलकुमारी खुश होती, ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगती।

अध्यापन संकेत : बच्चों से राजा-रानी की कोई कहानी सुनाने को कहें। कहानी पर चर्चा करते हुए बच्चों से यह कहानी स्वयं पढ़ने को कहें। अनुनासिक (ँ) और अनुस्वार (ं) वाले शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें। कहानी का अभिनय करवाएँ। त्र के अभ्यास के लिए-*पत्र*, *चित्र*, *मित्र*, *पुत्र*, *पुत्री*, *छात्र* आदि शब्द कार्डों से पढ़वाएँ। *खुश-उदास* का उदाहरण देकर कुछ अन्य उलटे अर्थवाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ।

एक दिन फूलकुमारी राजा और रानी के साथ बगीचे में बैठी थी। तभी वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। यह देखकर राजा ने कहा, "तुम ऐसे ज़ोर-ज़ोर से क्यों हँसती हो?"

यह सुनकर फूलकुमारी उदास हो गई। अब वह न तो हँसती थी, न खेलती थी और न नाचती-गाती थी। वह उदास रहने लगी।

अपनी बेटी को उदास देखकर रानी बहुत उदास हो गई। बेटी और रानी को उदास देखकर राजा भी उदास रहने लगा।

एक दिन राजा बहुत उदास बैठा था। उसके पास एक आदमी आया और बोला, ''महाराज! सब फूल मुरझाने लगे हैं। वे उदास हो गए हैं।''

एक और आदमी आया। वह बोला, ''महाराज! सब चिड़ियाँ उदास हो गई हैं।''

इसके बाद एक आदमी और आया। उसने राजा से कहा, ''महाराज! महाराज! सब बच्चे उदास हो गए हैं।''

यह सुनकर राजा सोचने लगा – फूलकुमारी, फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए हैं!

राजा और रानी ने अपनी बेटी से कहा, ''हँसो बेटी, हँसो।'' पर फूलकुमारी नहीं हँसी। वह अब भी उदास थी।

राजा ने मंत्री से कहा, ''हमारी बेटी बहुत उदास रहती है। जाओ, सबसे कह दो, जो फूलकुमारी को हँसा देगा, हम उसे बहुत इनाम देंगे।''

यह सुनकर बहुत से लोग आए। भालूवाला आया। उसने भालू का नाच दिखाया। बंदरवाला आया।

उसने बंदर को नचाया। नाच देखकर सब लोग हँसे, फूलकुमारी नहीं हँसी।

तभी एक और तमाशेवाला आया। वह एक बकरे पर बैठा था। तमाशेवाला नाचने लगा। उसे देखकर बकरा नाचने लगा। यह देखकर सब हँसे, पर फूलकुमारी नहीं हँसी।

नाचते-नाचते तमाशेवाले की टोपी गिर गई। उसने टोपी उठाई तो दाढ़ी गिर गई। यह देखकर सब लोग हँस पढ़े, पर फूलकुमारी फिर भी नहीं हँसी।
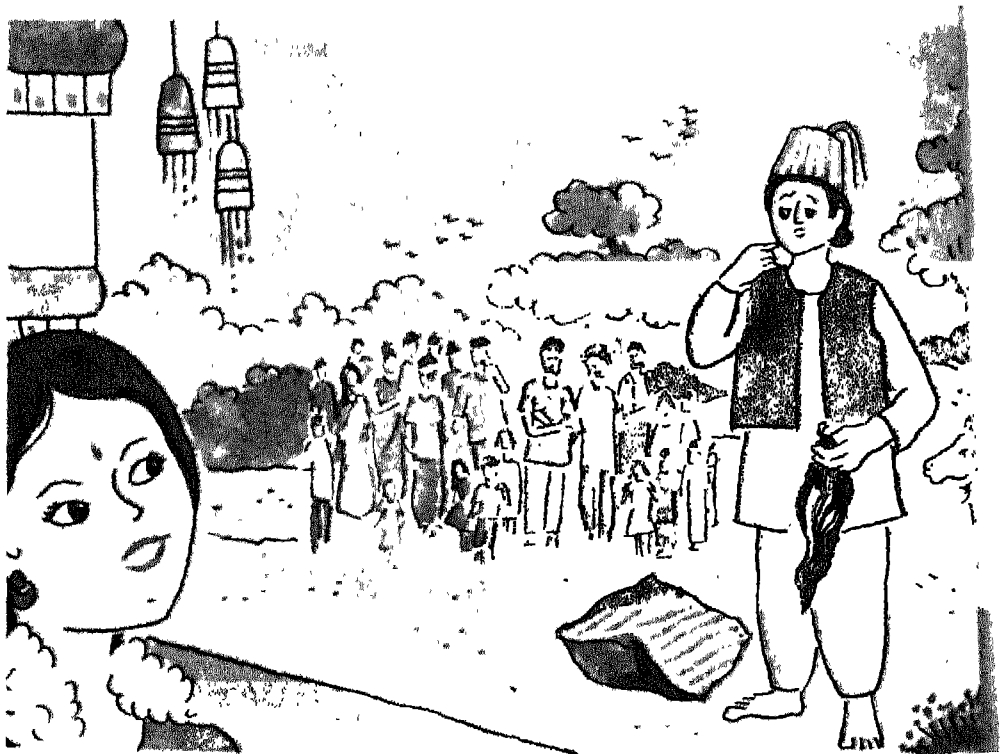
जब तमाशेवाले ने अपनी दाढ़ी उठाई तो उसका बड़ा पेट गिर पड़ा। यह देखते ही फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।

फूलकुमारी के हँसते ही फूल, चिड़ियाँ और बच्चे भी चहक उठे। राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।

बताओ, क्यों?

(क) 1. फूलकुमारी उदास रहने लगी।
2. फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए।
3. फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।
4. राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।

(ख) जब फूलकुमारी उदास रहने लगी तब राजा और रानी भी उदास हो गए। पर जब वह हँस पड़ी तब बताओ, राजा, रानी और सब लोगों को कैसा लगा होगा?

- ❑ वे उदास हो गए।
- ❑ वे खुश हो गए।
- ❑ उसका हँसना अच्छा नहीं लगा होगा।

पढ़ो, समझो और लिखो

(क)	राजा	रानी	(ख)	बादल	बादलों से
	राजकुमार	——		तालाब	—— में
	लड़का	——		लड़का	—— को
	बेटा	——		बंदर	—— का

पढ़ो और लिखो

फूलकुमारी हँसना सूर्य राजकुमार चिड़ियाँ

तमाशेवाला दाढ़ी मुरझाने मंत्री बकरा

10. ऐसे सूरज आता है

पूरब का दरवाज़ा खोल
धीरे-धीरे सूरज गोल
लाल रंग बिखराता है
ऐसे सूरज आता है।

अध्यापन संकेत : रोज़ सुबह सूरज निकलता है। पूछिए — सुबह सूरज निकलते हुए किस-किसने देखा है? उस समय उसका रंग कैसा होता है? सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है? आदि। बताइए कि दोपहर को सूरज बहुत तेज़ चमकता है। शाम होते-होते धूप कम होने लगती है और फिर सूरज डूब जाता है। डूबते समय उसक रंग फिर लाल होता है। बच्चों को निकलते और डूबते सूर्य को देखने के लिए प्रेरित करें। चर्चा द्‌वारा कवित का मूल भाव स्पष्ट करें। चारों दिशाओं का ज्ञान करवाएँ। कविता को पूर्व विधि द्‌वारा याद करवाएँ।

गाती हैं चिड़ियाँ सारी
खिलती हैं कलियाँ प्यारी
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है
ऐसे सूरज बढ़ता है।

लगते हैं कामों में सब
सुस्ती कहीं न रहती तब
धरती-गगन दमकता है
ऐसे तेज़ चमकता है!

गरमी कम हो जाती है
धूप थकी सी आती है
सूरज आगे चलता है
ऐसे सूरज ढलता है।

❑ श्रीप्रसाद

पूरा करो

(क) पूरब का दरवाज़ा खोल

____

(ख) लगते हैं कामों में सब

सुस्ती ________________

(ग) धरती-गगन ________________

ऐसे तेज़ ________________

(घ) गरमी कम ________________

धूप थकी सी ________________

सूरज आगे चलता है

____

बताओ

1. सूरज किधर से निकलता है?
2. सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है?
3. सूरज किधर छिपता है?
4. सूरज के छिपने पर क्या होता है?

पढ़ो और समझो

धरती	=	ज़मीन	ढलना	=	छिपना
गगन	=	आसमान	दमकना	=	चमकना

11. नन्ही बुलबुल

क्यारियाँ	आँवला	अमरूद	घोंसला
आँसू	नींबू	हिम्मत	परेशान

एक बगीचा था। बगीचा बहुत सुंदर था। उसमें तरह-तरह के फूलों की क्यारियाँ थीं। नींबू, आँवला, आम, जामुन और अमरूद के बहुत सारे पेड़ थे।

जामुन के पेड़ पर बुलबुल के एक जोड़े ने अपना घोंसला बनाया। पेड़ को बहुत अच्छा लगा। वह उनकी मीठी-मीठी बातें सुनता। उनकी हँसी-खुशी में खुश होता। जब बुलबुल का जोड़ा दाना चुगने जाता तो पेड़ घोंसले में पड़े अंडे पर अपने पत्तों से छाया करता। उसकी देखभाल करता।

अध्यापन संकेत : चिड़ियों के बारे में बातचीत करें। गानेवाली एक चिड़िया के रूप में बुलबुल का परिचय दें। उन्हें बताइए कि चिड़ियाँ घोंसला कहाँ बनाती हैं। अब पूरी कहानी पहले स्वयं पढ़ें। बीच-बीच में प्रश्नों द्वारा बच्चों की रोचकता बनाए रखें। कहानी के मूल भाव — हमें जीवों को सताना या मारना नहीं चाहिए, उनसे प्यार करना चाहिए — को निकलवाएँ। उन्हें इस प्रकार के अन्य अनुभव सुनाने को कहें। वचन बदलने के अभ्यास *रस्सी-रस्सियाँ* आदि श्यामपट पर लिखकर कराएँ। संयुक्तव्यंजन होने पर(ि)कहाँ लिखा जाएगा—इस ओर ध्यान दिलाएँ। चिड़ियों की और कहानियाँ या कविताएँ सुनें, सुनाएँ। अभिनय कराएँ।

एक दिन अंडे में से नन्ही बुलबुल निकली। उसकी आवाज़ सुनकर पेड़ बहुत खुश हुआ। उसने यह बात बगीचे के दूसरे पेड़-पौधों और चिड़ियों को बताई। इसे सुनकर चिड़ियाँ चहकने लगीं। पेड़-पौधे अपनी पत्तियाँ हिलाने लगे।

धीरे-धीरे नन्ही बुलबुल बड़ी होने लगी। वह फुदक-फुदक कर पूरे बाग में नाचती और गाती। सभी उसे प्यार करते।

एक दिन नन्ही बुलबुल के माता-पिता दाना चुगने गए। शाम को वे घर नहीं लौटे। नन्ही बुलबुल घबरा

गई। पेड़ ने कहा, ''घबराओ मत। वे अभी लौट आएँगे।'' पर वे नहीं आए। रात हो गई। नन्ही बुलबुल रोने लगी। यह बात पूरे बगीचे में फैल गई। सब परेशान हो उठे। आम, अमरूद, नींबू, आँवला सब नन्ही बुलबुल को समझाने लगे। पर वह सारी रात जागती रही। बगीचे की चिड़ियाँ और पेड़-पौधे भी उसके साथ जागते रहे।

सुबह हो गई। सब सोच रहे थे – क्या किया जाए! तभी उन्होंने देखा कि बुलबुल का जोड़ा धीरे-धीरे उड़ता चला आ रहा है। पूरे बगीचे में खुशी छा गई।

नन्ही बुलबुल, माँ के गले लगकर खूब रोई। ये खुशी के आँसू थे। माँ बुलबुल ने बताया, ''कल जब हम दाना चुगने एक खेत में उतरे, एक लड़के ने मुझे पत्थर मार दिया। मेरे पंख में चोट लग गई। पर मैंने हिम्मत से काम लिया। किसी तरह उड़कर पास ही नीम की डाल पर बैठ गई। तुम्हारे पिता मेरी देखभाल करते रहे। अब मैं काफी ठीक हूँ।''

पूरी बात सुनकर नन्ही बुलबुल को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, ''मैं ऐसे बच्चों को कभी गाना नहीं सुनाऊँगी।''

बताओ

1. बगीचे में कौन-कौन से पेड़ थे?
2. बुलबुल के जोड़े ने अपना घोंसला कहाँ बनाया?
3. नन्ही बुलबुल की आवाज़ सुनकर बगीचे में क्या हुआ?
4. बुलबुल का जोड़ा रात को घर क्यों न लौट पाया?
5. नन्ही बुलबुल किन बच्चों को गाना नहीं सुनाना चाहती?

पढ़ो और लिखो

(क)	पत्ती	पत्तियाँ	मक्खी	मक्खियाँ
	रस्सी	———	बिल्ली	———
	सब्ज़ी	———	बस्ती	———
(ख)	पौधा	पौधे	आँवला	———
	घोंसला	———	अंडा	———
	बगीचा	———	पत्ता	———

पढ़ो और समझो

क्यों	क्यारी	वाक्य	क् + य = क्य
मक्खी	मक्खन		क् + ख = क्ख
इन्हें	नन्ही	उन्हें	न् + ह = न्ह

श्रुतलेख

क्यारियाँ अमरूद हिम्मत पत्तियाँ रूमाल

रुकना नन्ही ज़रूर आँवला

वाक्य बनाओ

हिम्मत छाया घोंसला आँसू देखभाल

12. आसमान गिरा

खरगोश	अचानक	धम्म	ठहरो	लोमड़ी
आसमान	जानवर	चौंक	दहाड़	हँसने

एक खरगोश था। वह पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक ज़ोर की आवाज़ हुई – धम्म! खरगोश उठ बैठा। वह बोला, ''अरे, क्या गिरा?''

अध्यापन संकेत : जंगली जानवरों के नाम पूछें। छोटे-बड़े जानवरों के बारे मे बात करें। अभिनयात्मक ढंग मे कहानी सुनाएँ। बीच-बीच में प्रश्न पूछकर बच्चों का ध्यान कहानी में बनाए रखें। प्रश्नों द्वारा कहानी का मुख्य भाव—किसी की कही हुई बात को सुनकर ही सच नहीं मान लेना चाहिए, किसी बात के बारे में पूरी जानकारी लेकर ही उस पर विश्वास करना चाहिए, निकलवाएँ। *म्म* और *म्ह* संयुक्तव्यंजनों से बनने वाले शब्दों को अभ्यास कार्य में करवाकर कुछ अन्य शब्दों को कार्डों से पढवाएँ। जानवरों के मुखौटे बनवाएँ और कहानी का अभिनय करवाएँ।

खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा आसमान गिर रहा है। खरगोश डर गया और भागने लगा।

भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली। उसने पूछा, ''खरगोश भाई, कहाँ भागे जा रहे हो? ज़रा सुनो तो।''

खरगोश भागते-भागते बोला, ''आसमान गिर रहा है, भागो! भागो! जल्दी भागो!''

लोमड़ी भी भागने लगी। आगे जाकर उन्हें एक भालू मिला। भालू बोला, ''ठहरो, ठहरो! कहाँ भागे जा रहे हो?''

खरगोश और लोमड़ी बोले, ''भागो! तुम भी भागो। आसमान गिर रहा है!''

भालू भी उनके साथ भागने लगा।

खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले। हाथी बोला, ''अरे! सब क्यों भागे जा रहे हो? ठहरो, कुछ बताओ तो।''

भालू बोला, ''आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो।'' हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे – आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमड़ी, उसके

पीछे भालू और सबके पीछे हाथी।

भागते-भागते उन्हें शेर मिला। उसने पूछा, ''तुम सब क्यों भागे जा रहे हो?''

हाथी बोला, ''आसमान गिर रहा है। तुम भी भागो।''

शेर ने दहाड़ कर कहा, ''आसमान गिर रहा है।

कहाँ गिर रहा है? रुको।'' यह सुनकर सभी जानवर रुक गए।

शेर ने पूछा, ''किसने कहा आसमान गिर रहा है?''

हाथी बोला, ''भालू ने कहा।''

भालू बोला, ''मुझसे तो लोमड़ी ने कहा।''

लोमड़ी बोली, ''मुझसे तो खरगोश ने कहा था। सबसे पहले इसी ने कहा था।''

खरगोश चुप रहा।
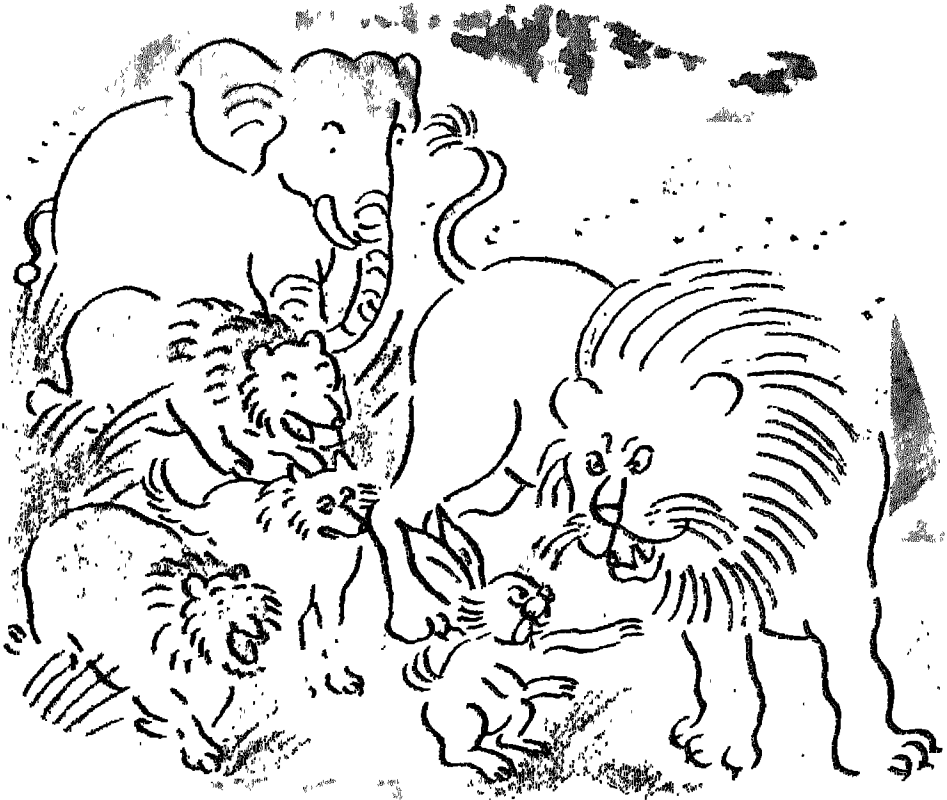
शेर बोला, ''कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान?''

खरगोश ने कहा, ''मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।''

शेर ने कहा, ''चलो, चलकर देखें।''

वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा। वहाँ एक बड़ा सा फल गिरा पड़ा था। तभी वैसा ही एक और फल गिरा – धम्म! खरगोश चौंक गया।

शेर बोला, ''तो यही तुम्हारा आसमान था। लो फिर आसमान गिरा। भागो!''

और सभी हँसने लगे।

बताओ

1. धम्म की आवाज़ सुनकर खरगोश ने क्या समझा?
2. खरगोश के पीछे कौन-कौन भागा?
3. शेर ने जानवरों से क्या पूछा?
4. पेड़ के नीचे पहुँचकर जानवरों ने क्या देखा?

पहले क्या हुआ? फिर क्या हुआ? उसके बाद क्या हुआ?

- [ ] खरगोश डरकर भागने लगा।
- [ ] शेर ने पूछा, ''किसने कहा, आसमान गिर रहा है?''
- [ ] भागते-भागते खरगोश को एक लोमड़ी मिली।
- [ ] खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था।
- [ ] तभी वैसा ही एक और फल गिरा।

पढ़ो और समझो

धम्म	अम्मा	हिम्मत	म् + म = म्म
गुब्बारा	धब्बा	डिब्बा	ब् + ब = ब्ब
तुम्हारा	तुम्हें	कुम्हार	म् + ह = म्ह

पढ़ो, समझो और लिखो

तुम्हारा	तुम्हारी	तुम्हारे
हमारा	______	______
मेरा	______	______
उसका	______	______

करो

अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से कक्षा में इस कहानी का अभिनय करो।

13. साथी की सहायता

उम्र	ग्यारह	रुपए	सहायता
साथियों	खर्च	चित्तरंजन	देशबंधु

एक बालक था। उसकी उम्र ग्यारह वर्ष की थी। एक दिन वह अपने पिताजी के पास गया और बोला, ''पिताजी ! मुझे पाँच-सात रुपए दे दीजिए।''

अध्यापन संकेत : पाठ के नए शब्द श्यामपट पर लिखकर पढ़वाएँ। पाठ में र के दो रूपों का प्रयोग कई बार हुआ है, जैसे— *उम्र, प्रसन्न, वर्ष, खर्च* आदि। इन्हें श्यामपट्ट पर लिखकर बार-बार पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाइए : ज़रूरत के समय लोगों की सहायता करनी चाहिए। अन्य महापुरुषों के बचपन की घटनाएँ सुनाएँ और उन्हें पढ़ने को प्रेरित करें।

पिताजी ने कहा, ''पाँच-सात रुपए ! तुम ये रुपए किसलिए माँग रहे हो?''

बालक बोला, ''मुझे इन रुपयों की ज़रूरत है।''

पिताजी ने बालक को पाँच रुपए दे दिए। लेकिन वे जानना चाहते थे कि बालक रुपए किस काम में खर्च करेगा। वे चुपचाप उसके पीछे चल पड़े।

बालक सीधा अपने साथी के घर गया। वह उसे बुला लाया। फिर दोनों बाज़ार की ओर चल पड़े। पिताजी भी उनके पीछे-पीछे गए।
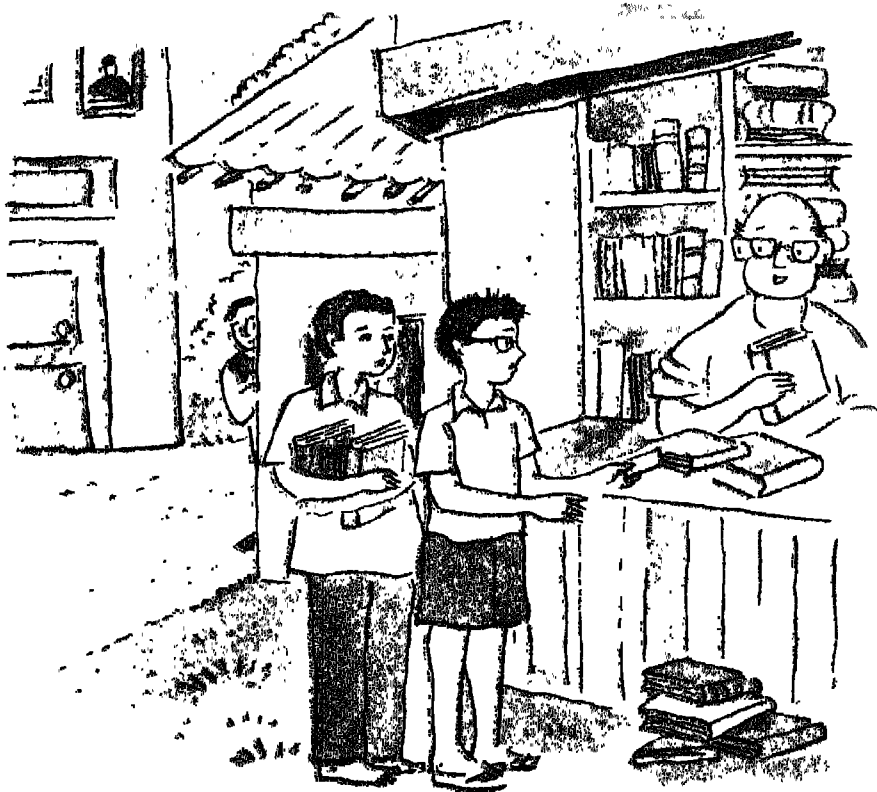
बाज़ार में पुस्तकों की एक दुकान थी। वहाँ दोनों रुक गए। बालक ने कुछ पुस्तकें खरीदीं और अपने साथी को दे दीं। साथी को इन पुस्तकों की बहुत ज़रूरत थी।

पिताजी सब कुछ समझ गए। वे प्रसन्न थे कि उनके बेटे ने अपने साथी की मदद की।

पिताजी ने बालक को बुलाया। वे प्यार से बोले, "तुमने बहुत अच्छा काम किया है। साथियों की सहायता करना बहुत अच्छी बात है। मैंने तुम्हें पुस्तकें खरीदते देख लिया था।"

इस बालक का नाम था – चित्तरंजन दास। चित्तरंजन दास ने देश की बहुत सेवा की। लोग इन्हें देशबंधु चित्तरंजन दास कहने लगे।

बताओ

1. बालक का नाम क्या था?
2. बालक ने अपने पिताजी से रुपए क्यों माँगे?
3. पिताजी बालक के पीछे-पीछे क्यों गए?
4. पिताजी क्यों प्रसन्न थे?

पढ़ो, समझो और लिखो

पुत्र	बेटा	बालक	———
साथी	———	साल	———
किताब	———	सहायता	———

खाली स्थान भरो

साथी सहायता बाज़ार पुस्तक

(क) मेरे ——— का नाम मोहन है।

(ख) ——— में कई चीज़ें बिकती हैं।

(ग) राजन ने कहानी की ——— खरीदी।

(घ) हमें सबकी ——— करनी चाहिए।

पढ़ो और लिखो

उम्र	नम्र	चक्र
नमस्ते	बस्ता	पुस्तक
ग्यारह	योग्य	भाग्य

पढ़ो और समझो

रुपया	रुपए	रुपयों से
भेड़िया	भेड़िए	भेड़ियों ने
पहिया	पहिए	पहियों से

14. दीप जलाओ

दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे
खुशी-खुशी सब हँसते आओ
आज दिवाली रे।

मैं तो लूँगा खील-खिलौने
तुम भी लेना भाई
नाचो गाओ खुशी मनाओ
आज दिवाली आई।

अध्यापन संकेत : बच्चों से दिवाली के बारे में बातचीत करें। बच्चों को,इस त्योहार के बारे में अपने अनुभव सुनाने को कहें। लय और तान के साथ कई बार कविता-पाठ करें। बच्चों को कविता गाकर सुनाने को कहें। बच्चे कक्षा साफ़ करें, सजाएँ, बत्तियाँ बनाएँ, दीप जलाएँ। कार्ड बनाकर अपने साथियों को भेजें। चार्ट-पेपर से दीए काटकर, सुनहरे कागज़ की बत्ती लगाकर दीए और मोमबत्ती, कंडील बनवाएँ। चर्चा द्वारा उभारें--हमें पटाखे चलाते समय सावधान रहना चाहिए।

आज पटाखे खूब चलाओ
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।

नए-नए मैं कपड़े पहनूँ
खाऊँ खूब मिठाई
हाथ जोड़कर पूजा कर लूँ
आज दिवाली आई

खाओ मित्रो खूब मिठाई
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।

आज दुकानें खूब सजी हैं
घर भी जगमग करते
झलमल-झलमल दीप जले हैं
कितने अच्छे लगते।

आओ नाचो खुशी मनाओ
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।
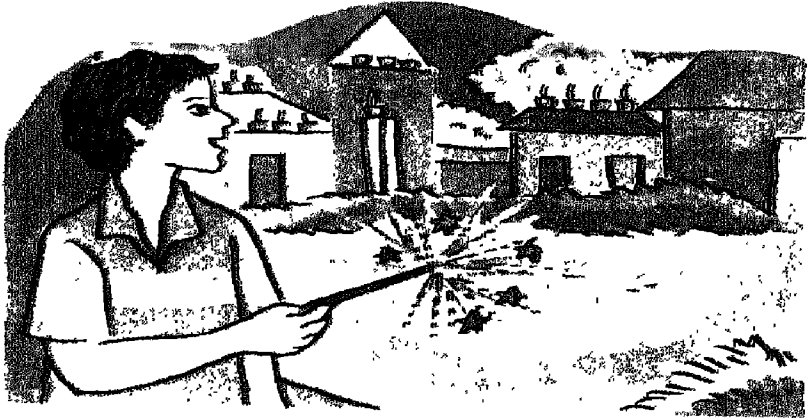
पढ़ो और पूरा करो

(क) दीप जलाओ ______________

आज ______________

(ख) आज पटाखे ______________

आज ______________

(ग) आज दुकानें खूब सजी हैं

____

(घ) खाओ मित्रो ______________

आज दिवाली रे

बताओ

1. यह कविता किसके बारे में है?
2. दिवाली के दिन क्या-क्या करते हैं?

चित्र बनाओ

दिवाली के बारे में कोई चित्र बनाओ।

करो

पाठशाला में सभी साथी मिलकर दिवाली मनाओ।

15. बादल

बूँदें	वर्षा	समुद्र	प्रश्न	भाप
सूर्य	ठंड	रसोईघर	तुरंत	केतली

एक दिन भरत पाठशाला से घर आ रहा था। आसमान में बादल छाए हुए थे। घर अभी कुछ दूर था। इतने में बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। भरत भागता हुआ घर पहुँचा। फिर भी वह भीग गया था।

भरत को देखते ही पिताजी बोले, ''जाओ, कपड़े बदल लो, नहीं तो सरदी लग जाएगी।''

कपड़े बदलते हुए भरत सोचने लगा – आसमान में पानी कहाँ से आता है? बादल आने पर ही वर्षा

अध्यापन संकेत : यह पाठ विज्ञान से संबंधित है। इसमें बादलों के बनने और वर्षा होने की प्रक्रिया का वर्णन है। पाठ शुरू करने से पहले बच्चों से बादलों और वर्षा के संबंध में बातचीत करें। अपनी ओर से पूरी प्रक्रिया को सरल ढंग से समझाएँ। पूरा पाठ धीरे-धीरे पहले स्वयं पढ़ें। वाक्य-प्रयोग द्वारा कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें। चर्चा द्वारा विषय को सरल बनाएँ। बच्चों से पाठ का सस्वर वाचन करवाएँ। बादल और वर्षा पर कोई कविता सुनें और सुनाएँ। बादल कई रूप बदलते हैं। बच्चों को उन्हें देखने और उनका आनंद उठाने के लिए प्रेरित करें।

क्यों होती है? उसने सोचा, पिताजी से पूछना चाहिए। वह कपड़े बदलकर पिताजी के पास गया।

भरत ने पूछा, ''पिताजी, वर्षा का पानी कहाँ से आता है?''

''बादलों से !'' पिताजी ने बताया।

भरत ने फिर पूछा, ''लेकिन बादलों में इतना पानी कहाँ से आता है?''

पिताजी ने समझाते हुए कहा, ''बेटा, तालाबों, नदियों और समुद्रों में पानी होता है। सूर्य की तेज़ गरमी से यही पानी भाप में बदल जाता है। फिर भाप आसमान में जाकर बादल बन जाती है।''

भरत ने प्रश्न किया, ''पिताजी, भाप बादल कैसे बन जाती है?''

पिताजी ने उत्तर दिया, ''भाप हवा से हलकी होती है। हलकी होने के कारण यह ऊपर उठती है। ऊपर होती है ठंड! ठंड से ही भाप फिर से पानी की

बहुत ही नन्ही-नन्ही बूँदों का रूप ले लेती है। बादल ऐसी ही नन्ही-नन्ही बूँदों का समूह है।''

पिताजी भरत को रसोईघर में ले गए। वहाँ माँ चाय बना रही थी। चूल्हे पर केतली रखी थी। केतली के मुँह से भाप निकल रही थी। भाप ऊपर की ओर उठ रही थी। पिताजी ने ठंडे पानी से भरा एक गिलास उठाया। इस गिलास को वे भाप के पास ले आए। कुछ देर गिलास को वहीं पकड़े खड़े रहे।

भरत ने देखा – गिलास पर से पानी की बूँदें टपक रही हैं। भरत सब कुछ समझ गया। वह बहुत खुश था।

बताओ

1. भरत क्यों भीग गया था?
2. भाप कैसे बनती है?
3. भाप ऊपर क्यों उठती है?
4. पिताजी भरत को रसोईघर में क्यों ले गए?

वाक्य पूरे करो

भाप   बूँदों   बादल   पानी

(क) बादलों में इतना ——— कहाँ से आता है?

(ख) सूर्य की गरमी से पानी ——— बन जाता है।

(ग) ——— पानी बरसाते हैं।

(घ) बादल नन्ही-नन्ही ——— का समूह है।

पढ़ो और लिखो

चूल्हा   कुल्हाड़ी   दूल्हा   वर्षा   सूर्य   हर्ष
प्रेम   प्रश्न   मद्रास   नन्ही   इन्हें   उन्हें

पढ़ो और समझो

पंख	=	पङ्ख	सुंदर	=	सुन्दर
चंचल	=	चञ्चल	आनंद	=	आनन्द
ठंड	=	ठण्ड	रंजन	=	रञ्जन
तुरंत	=	तुरन्त	बंधु	=	बन्धु
पंप	=	पम्प	मंजन	=	मञ्जन

16. साहसी बालक

पूर्णचंद्र	बस्ती	प्रतिदिन	झोपड़ियाँ
लट्ठे	जनवरी	साहसी	इनाम

पूर्णचंद्र का घर एक घनी बस्ती में था। वह प्रतिदिन बस्ती की पाठशाला में पढ़ने जाया करता था। उसे पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। वह पाठशाला से आकर थोड़ा खेलता और फिर पढ़ने बैठ जाता।

आज पाठशाला में ही पूर्णचंद्र खेलते-खेलते बहुत थक गया था। उसने सोचा—खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा, फिर पढ़ूँगा।

अध्यापन संकेत : *पूर्णचंद्र, लट्ठे, बस्ती, बाँस, झोपड़ी* — शब्दों को श्यामपट पर लिखें और इनका उच्चारण करवाएँ। *लट्ठा, बस्ती, फूस, झोपड़ी* के अर्थ स्पष्ट करें। *इंद्र-सुंदर, चंद्र-मंदिर* जैसे शब्दों के उदाहरणों द्वारा *द्र (द् र)* और *(दर)* के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। *बंद* और *बन्द*, चंद्र और चन्द्र की तरह के अन्य जोड़े श्यामपट पर लिखकर बताएँ कि ये दोनों ही ठीक हैं लेकिन आजकल इन्हें बिंदु के साथ ही लिखा जाता है। मिलते-जुलते क्रियापदों जैसे—*करूँगा, पढ़ूँगा, खेलूँगा* आदि पर ध्यान दिलाएँ और वैसे ही अन्य क्रियापद बताने को कहें। बच्चों को अपने जीवन या परिचित व्यक्तियों के जीवन के साहसिक अनुभव सुनाने को प्रोत्साहित करें।

पूर्णचंद्र थका हुआ तो था ही, जैसे ही चारपाई पर लेटा उसे गहरी नींद आ गई। नींद में उसे कुछ लोगों के भागने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। वह घबराकर उठ बैठा। सचमुच लोग चिल्ला रहे थे।
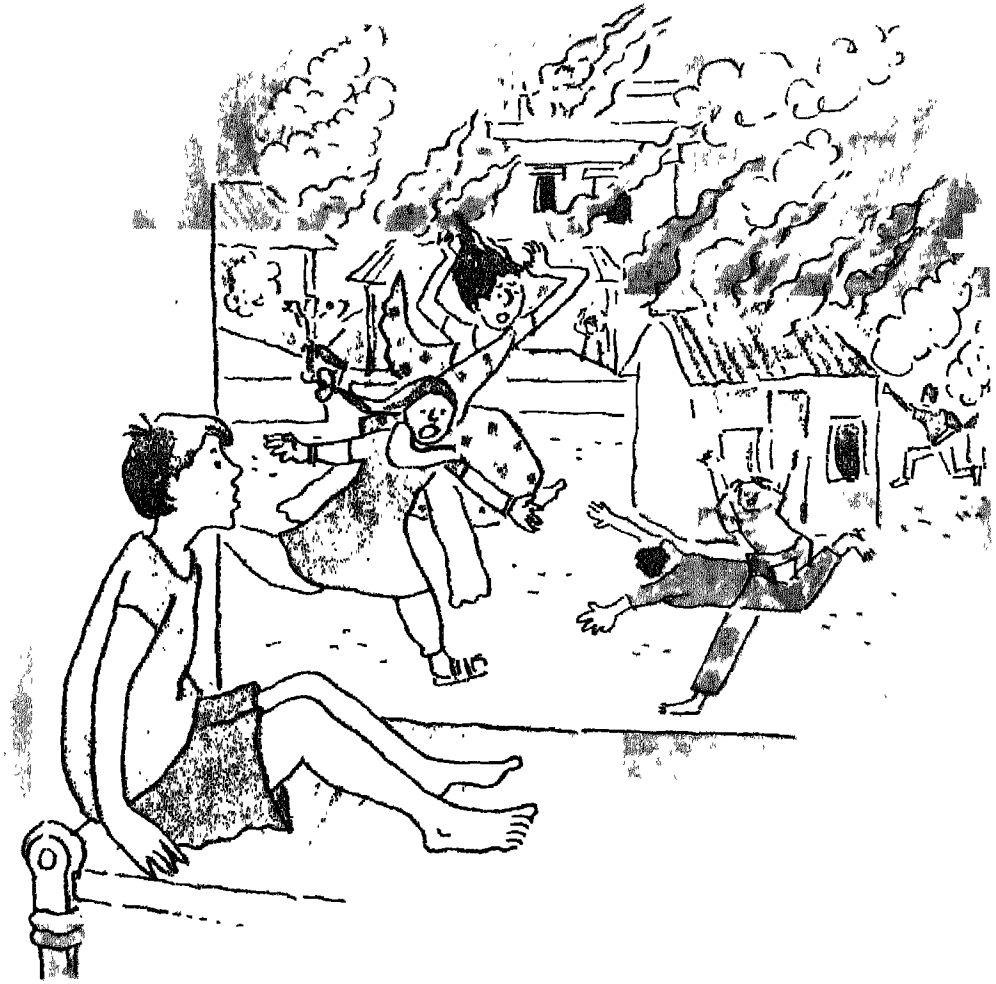
''आग! आग!''

''आग! आग! बस्ती में आग लग गई है।''

पूर्णचंद्र भागा-भागा बाहर आया। उसने इधर-उधर देखा, लोग एक ओर भागे जा रहे थे। पूर्णचंद्र भी उधर ही भागने लगा।

उसने देखा, कई झोंपड़ियों और मकानों में आग लगी हुई थी। आग पूर्णचंद्र की पाठशाला की ओर

बढ़ रही थी। इतने में पाठशाला की छत पर एक जलती हुई लकड़ी आ गिरी।

पाठशाला का दरवाज़ा बंद था। उस पर ताला लगा हुआ था। पूर्णचंद्र ने कुछ सोचा। वह झट बाँस के एक लट्ठे के सहारे छत पर चढ़ गया।

फूस की छत तेज़ी से आग पकड़ रही थी। पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस नीचे फेंक दिया।

लोगों ने फूस पर पानी डाला। आग बुझ गई। पूर्णचंद्र ने अपनी पाठशाला को जलने से बचा लिया।

इतने में आग बुझाने वाले भी आ गए। जगह-जगह पानी डालकर उन्होंने आग बुझा दी।

भारत सरकार ने 26 जनवरी को साहसी बालक पूर्णचंद्र को इनाम दिया।

किसने कहा, क्यों कहा?

(क) खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा।

(ख) आग! आग! बस्ती में आग लग गई।

बताओ

1. पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस नीचे क्यों फेंक दिया?
2. सरकार ने पूर्णचंद्र को इनाम क्यों दिया?
3. पूर्णचंद्र कैसा लड़का था?

पढ़ो और समझो

लट्ठा	गट्ठा	इकट्ठा	ट्+ठ=ट्ठ
चन्द्रमा	इन्द्र	पन्द्रह	न्+द्+र=न्द्र
चंद्र	इंद्र	पंद्रह	

वाक्य बनाओ

प्रतिदिन गहरी साहसी इनाम झोंपड़ी

पढ़ो और लिखो

पूर्णचंद्र	बस्ती	शौक	चारपाई	झोंपड़ियाँ
साहसी	इनाम	राजेन्द्र	इकट्ठा	बस्ता

17. सबकी सुराही

सुराही मज़बूत कुम्हार कीचड़ बेल-बूटे

एक थी सुराही। बहुत सुंदर, बहुत मज़बूत। उस पर सुंदर-सुंदर बेल-बूटे बने थे। भीमा सुराही को बार-बार देखता और खुश होता। वह सोचने लगा - मेरी मेहनत से ही यह

अध्यापन संकेत : यह पाठ गद्य और पद्य की मिली-जुली शैली में है। पहले इसे स्वयं पढ़ें फिर बच्चों से अभिनयात्मक ढंग से पढ़वाएँ। बच्चे — *कुम्हार, मिट्टी, पानी, चाक, आग और सुराही* पात्र बनकर पढ़ें। *कुम्हार, बेल-बूटे, चाक, मिट्टी* आदि के बारे में बात करें। सुराही या घड़ा कैसे बनाया जाता है — इसकी पूरी प्रक्रिया बच्चों को बताएँ। *मिट्टी-मिटी, पक्का-पका, बच्चा-बचा* शब्दों को श्यामपट पर लिखकर दोनों के उच्चारण और अर्थ के अंतर पर ध्यान दिलाएँ। सुंदर-सुंदर दो बार लिखने का मतलब है बल देना अर्थात बहुत सुंदर। अभ्यास में दिए इसी प्रकार के शब्दों को पढ़वाएँ और वाक्य बनवाएँ। चर्चा के माध्यम से उभारें — मिलजुल कर काम करने से काम अच्छा होता है। बच्चों से मिट्टी के बरतन बनवाएँ।

सुराही इतनी सुंदर बनी है। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। वह सपना देखने लगा। सुराही के पास पड़ी मिट्टी हिली और कहने लगी–

"सुराही सुराही मैंने तुम्हें बनाया
सुंदर रूप तुम्हारा मुझसे ही है आया।"

मिट्टी ने जब बार-बार यह कहना शुरू किया तब पास ही रखी हुई बालटी का पानी छलका। वह कहने लगा–
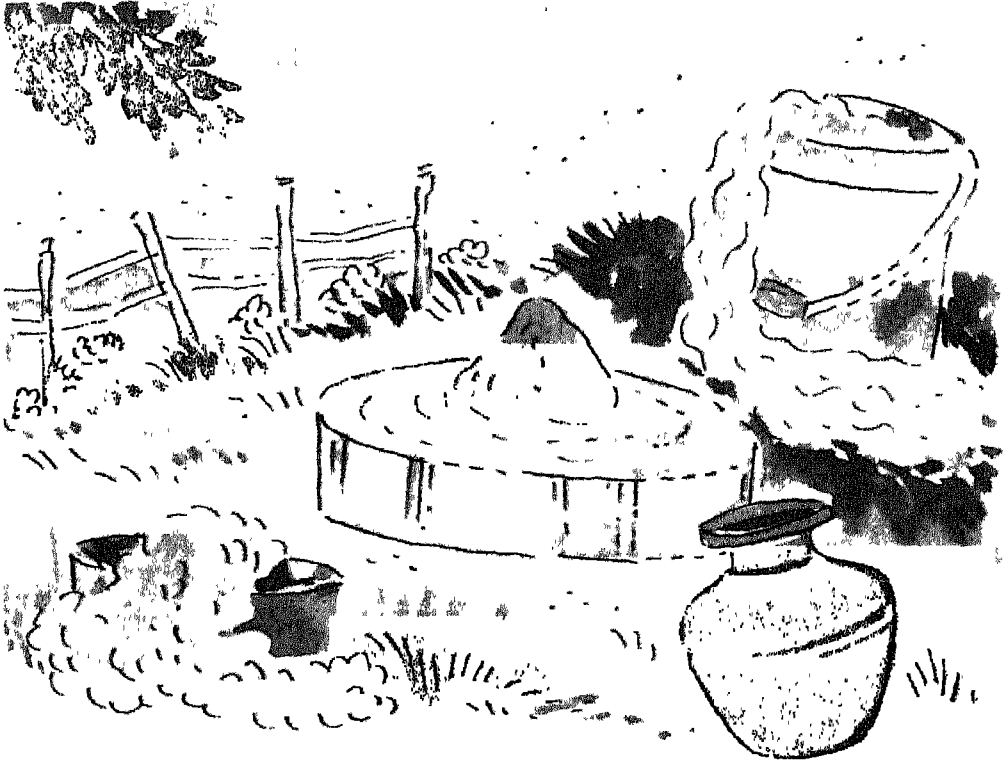
''मिट्टी रानी मिट्टी रानी मेहनत सारी मेरी
मैंने इसे बनाया तुम थी धूल की बस ढेरी।''

मिट्टी और पानी की बातें सुनकर भीमा कुम्हार का चाक चुप न रह सका। वह बोला–

''तुम दोनों थे कीचड़-मिट्टी
इस सच को लो जान
बनी सुराही मेरे कारण
बात यही लो मान।''

मिट्टी, पानी और चाक की बातें सुनकर बुझती आग भी जोश में आकर कहने लगी–

''तुम सब बातें कच्ची करते
कच्चा काम तुम्हारा
तप कर मुझमें बनी सुराही
असली काम हमारा।''

भीमा कुम्हार ने सबकी बातें सुनीं। वह बोला, ''सब चुप हो जाओ, चलो सुराही से पूछते हैं, उसे किसने बनाया।''

सुराही ने जब यह सवाल सुना, वह बोली–

''किसी एक का काम नहीं यह
सबकी मेहनत सबका काम
मिलजुल कर सब कर सकते हैं
अच्छे-अच्छे, सुंदर काम।''

बताओ

1. सुराही कैसी थी?
2. चाक ने क्यों कहा — सुराही मेरे कारण बनी है?
3. आग ने सुराही बनाने में क्या मदद की?
4. सुराही ने क्या कहा?

पढ़ो और समझो

सुंदर-सुंदर	पीछे-पीछे
बार-बार	हरी-हरी
ज़ोर-ज़ोर	धीरे-धीरे

वाक्य बनाओ

कुम्हार	पर	सबकी बातें सुनीं।
	को	सुंदर बेल-बूटे बने थे।
सुराही	ने	सबने मिलकर बनाया था।
	का	नाम भीमा था।

करो

मिट्टी से खिलौने बनाओ।

18. चाँद का कुरता

चाँद झिंगोला ठिठुर यात्रा भाड़े सलोने अंगुल

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
''सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफ़र और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का।''

अध्यापन संकेत : चर्चा करें कि हम कपड़े क्यों पहनते हैं? तुम नए कपड़े लेने के लिए किससे कहते हो? चाँद आसमान में रातभर घूमता है, क्या उसे भी कपड़ों की ज़रूरत पड़ती होगी? कपड़े सिलवाने के लिए वह किससे कहेगा? क्या माँ उसे कुरता या झिंगोला सिलवा देगी? लय और तान के साथ कविता को धीरे-धीरे पढ़ें जिससे अर्थ स्वयं ही स्पष्ट हो जाए। बच्चे साथ-साथ कविता बोलें, याद करें और सुनाएँ। चाँद के घटते-बढ़ते आकार को देखने के लिए प्रोत्साहित करें। श्यामपट पर चाँद का अलग-अलग आकार बनाकर भी दिखाएँ। बच्चों से चाँद के अलग-अलग आकार बनवाएँ।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।
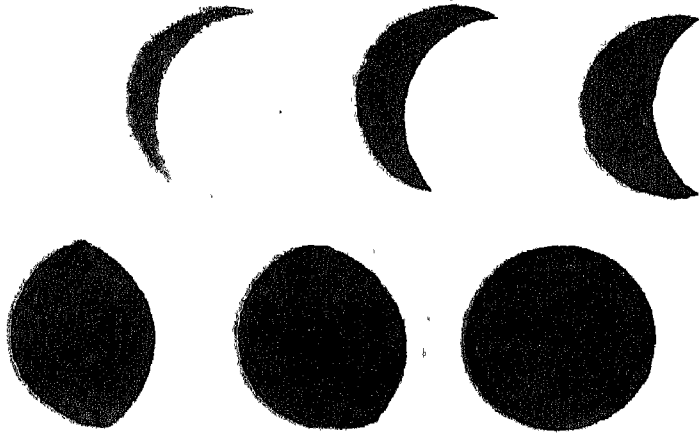
अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ बदन में आए?''

❑ रामधारी सिंह 'दिनकर'

पूरा करो

(क) हठ कर बैठा चाँद एक दिन,
______________________________,
''सिलवा दो माँ, ____________
______________________________।

(ख) कभी एक अंगुल भर चौड़ा,
______________________________,
बड़ा किसी दिन हो जाता है
______________________________।

बताओ

1. चाँद ने माँ से क्या कहा?
2. माँ ने चाँद को क्या उत्तर दिया?
3. चाँद को रात में क्या कठिनाई होती थी?
4. चाँद एक जैसा क्यों नहीं दिखता?

पढ़ो और समझो

हठ = ज़िद्द करना
झिंगोला = झबला, कुरते जैसा दिखने वाला एक ढीला वस्त्र
सन-सन = हवा चलने की आवाज़
ठिठुर-ठिठुर = सरदी से सिकुड़ना/काँपना
यात्रा = सफ़र
भाड़े = किराये का
सलोने = सुंदर

करो

1. चाँद और तारों के बारे में कोई और कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।
2. चमकीले कागज़ों से चाँद-सितारे काटकर मुखौटे बनाओ।

19. मोची और बौने

पत्नी	दुकान	चमड़ा	अंधेरा	बौने	खिड़की

एक मोची और उसकी पत्नी अपनी दुकान के पीछे रहते थे। मोची बहुत अच्छे जूते बनाता था। उसके पास पैसे बहुत कम थे। इसलिए वह एक जोड़ा जूते के लिए ही चमड़ा लाता था।

एक दिन काम करते-करते अंधेरा हो गया। मोची ने जूते बनाने के लिए चमड़ा काटकर रख दिया। फिर वह घर चला गया।

अगले दिन मोची दुकान में आया। मोची ने अपनी पत्नी से कहा, ''अरे! ये जूते! शाम को तो मैंने चमड़ा काटकर ही रखा था। देखो, रात में ऐसे सुंदर

अध्यापन संकेत : कहानी को रोचक ढंग से सुनाएँ। बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर निश्चित करें कि वे ध्यान से कहानी सुन रहे हैं। कहानी का मूल भाव कि अच्छे लोग दूसरों की मदद करके खुश होते हैं, निकलवाएँ। बच्चों से अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहें। कहानी का अभिनय करवाएँ। *ज़, फ़, ड़-ढ़, श-स* के शुद्ध उच्चारण पर बल दें।

और मज़बूत जूते किसने बना दिए!''

''कितने सुंदर जूते हैं!'' उसकी पत्नी बोली।

तभी दुकान पर एक आदमी आया। उन जूतों को देखकर बोला, ''ये जूते बड़े सुंदर हैं। मुझे दे दो भाई।'' मोची ने जूते उसे दे दिए। उसने मोची को बहुत से पैसे दिए।

उस दिन मोची दो जोड़े जूतों के लिए चमड़ा लाया। शाम को फिर चमड़ा काटकर वह चला गया।

अगले दिन वह दुकान में आया और बोला, ''अरे! आज भी जूते बन गए हैं। इनको कौन बना जाता है?''

उस दिन भी उसकी दुकान पर एक आदमी आया और बोला, ''ये जूते बड़े मज़बूत हैं। मुझे दे दो।'' मोची ने दोनों जोड़े जूते उसे दे दिए। उस आदमी ने भी मोची को बहुत-से पैसे दिए।
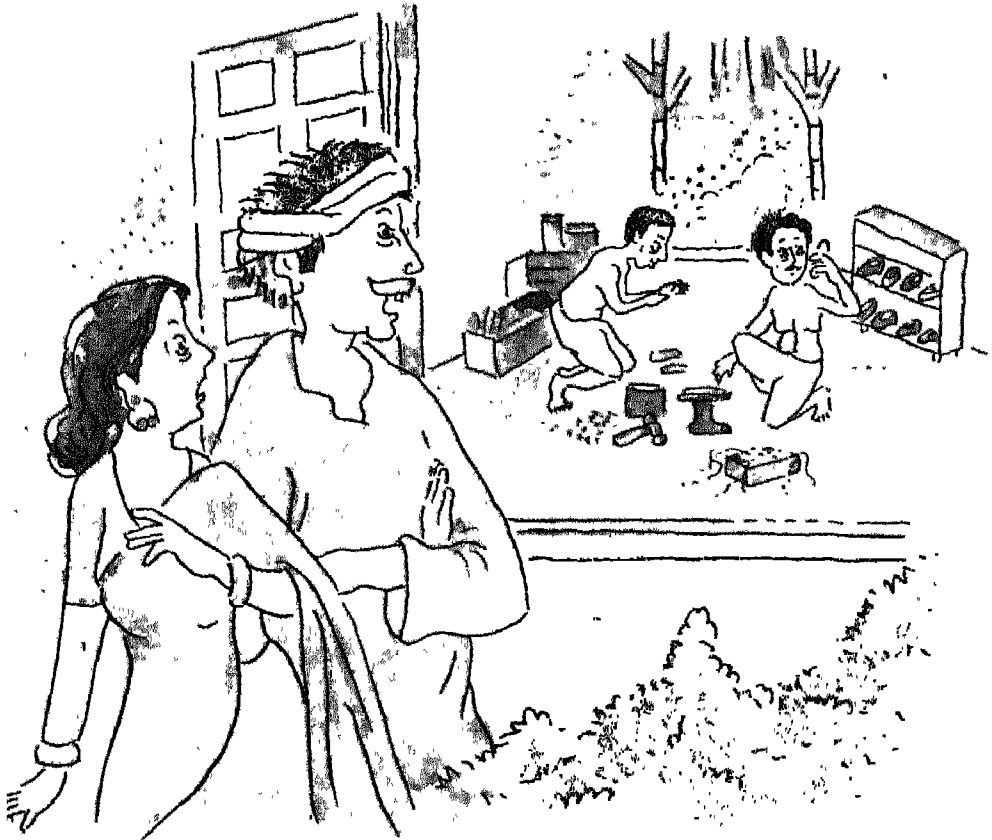
अब मोची अधिक चमड़ा लाने लगा। वह शाम को चमड़ा काटकर रख देता। दूसरे दिन उसे जूते बने मिलते। इस तरह उसके पास बहुत-से पैसे हो गए।

एक दिन मोची ने अपनी पत्नी से कहा, ''हम आज रात को खिड़की में से देखेंगे, ये जूते कौन बना जाता है।'' चमड़ा काटकर मोची अपनी पत्नी के साथ खिड़की के पीछे छिपकर बैठ गया और देखने लगा।

''देखो, देखो'', उसकी पत्नी धीरे से बोली। मोची ने देखा – दो बौने नाचते-नाचते आए और जूते बनाने लगे।

मोची की पत्नी बोली, ''अच्छा! तो ये बौने ही जूते बना जाते हैं। इन दोनों ने हमारी बहुत मदद की है। मैं इनके लिए सुंदर-सुंदर कपड़े बनाऊँगी।''

''मैं इनके लिए छोटे-छोटे जूते बनाऊँगा,'' मोची बोला।

मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए जूते और कपड़े बनाए। शाम को उन्हें दुकान में रख दिया। फिर वे खिड़की के पीछे बैठकर देखने लगे।

रात हुई। बौने आए। ''आज तो चमड़ा नहीं है,'' एक ने कहा।

''अरे! देखो! यह क्या? कपड़े और जूते!'' दूसरे बौने ने कहा।

कपड़े और जूते पहनकर वे बहुत खुश हुए और उछलते-कूदते चले गए।

मोची और उसकी पत्नी दोनों बहुत प्रसन्न थे।

बताओ

1. मोची और उसकी पत्नी कहाँ रहते थे?
2. मोची दो जोड़े जूतों के लिए चमड़ा क्यों लाया?
3. मोची को कैसे पता चला कि जूते कौन बना जाता था?
4. मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए क्या-क्या बनाया?

पढ़ो और बताओ, कौन सी बात सही है?

- ☐ मोची बहुत धनी था।
- ☐ मोची और उसकी पत्नी को बौने अच्छे लगे।
- ☐ मोची और उसकी पत्नी दोनों ही अच्छे थे।
- ☐ बौनों ने उनकी कुछ मदद नहीं की।
- ☐ वे भी बौनों को कुछ देना चाहते थे।

पढ़ो, समझो और लिखो

जूता	जूते
कपड़ा	—
बौना	—
दीया	दीए
रुपया	—
भेड़िया	—

पढ़ो और समझो

मज़बूत रोज़ जहाज़
साफ़ सफ़ाई सफ़ेद
पेड़ सड़क खिड़की

दाढ़ी सीढ़ी पढ़ना
शहतूत शीशा मशाल
सवेरा बरसना साहसी

20. बूझो तो जानें

(1)

नीचे पटको ऊपर जाती
ऊपर से फिर नीचे आती
ऊँची-ऊँची कूद लगाती
गोल-गोल हूँ तुमको भाती।

(2)

बिना पंख ही उड़ जाती
बाँध गले में डोर
खींचो तो ऊपर चढ़ जाती
रहे हाथ में छोर।

अध्यापन संकेत: ये पहेलियाँ एक-एक करके पूछिए। पहेली का सही उत्तर मिलने पर उसे श्यामपट पर लिखें। इसी प्रकार की अन्य पहेलियाँ बच्चों से आपस में बूझने को कहें।

(3)

चार पाँव पर चल न पाऊँ
बिना हिलाए हिल न पाऊँ
फिर भी सबको दूँ आराम
झटपट बोलो मेरा नाम।

(4)

तैर-तैर कर आती हो
मचल-मचल कर जाती हो
करती हो तुम मनमानी
कहलाती जल की रानी ।

❑ जयप्रकाश भारती
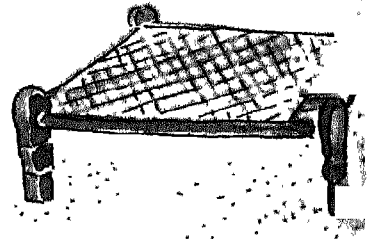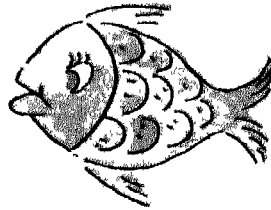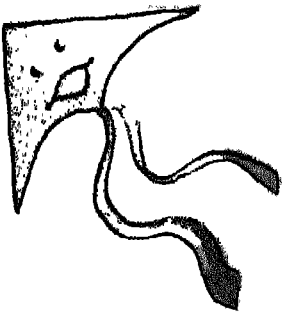
21. दाँतों की सफ़ाई

ऋषि	दाँत	डाक्टर
दातुन	बुरुश	खोखला

आज ऋषि के दाँत में बहुत दर्द हो रहा था। वह पाठशाला भी नहीं जा सका। ऋषि की माँ उसे दाँतों के डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने ऋषि के दाँतों को देखा। वे बोले, ''ऋषि बेटा, तुम्हारे दाँत तो बहुत गंदे हो रहे हैं। क्या तुम रोज़ दाँत साफ़ नहीं करते?''

ऋषि चुप रहा। माँ बोली, ''हाँ, डाक्टर साहब, यह रोज़ दाँत साफ़ नहीं करता। बहुत कहने पर ही दाँत साफ़ करता है।''

डाक्टर बोले, ''इसके दाँत में कीड़ा लग गया

अध्यापन संकेत: पाठ में आए नए शब्दों जैसे *ऋषि, दाँत, बुरुश, डाक्टर* आदि को श्यामपट पर लिखकर स्वयं उनका उच्चारण करें और बच्चों से करवाएँ। *ऋ* का यहाँ पहली बार प्रयोग किया गया है। *ऋ* श्यामपट पर लिखकर इसका उच्चारण करवाएँ। फिर लिखने का अभ्यास दें। इससे बनने वाले शब्दों, जैसे *ऋषि, ऋतु, ऋचा, ऋण* आदि को श्यामपट या कार्डों पर लिखकर पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बच्चों को दाँत साफ़ करने का सही तरीका बताएँ।

है। मैं अभी दवा लगा देता हूँ। दवा से दर्द कम हो जाएगा। पर आप ध्यान रखिएगा यह रोज़ दो बार अवश्य दाँत साफ़ करे।''

माँ बोली, ''दो बार?''

डाक्टर दवा लगाते हुए बोले, '' जी हाँ, दाँत दो बार ही साफ़ करने चाहिए। एक बार सुबह उठने के बाद और दूसरी बार रात को सोने से पहले। बुरुश या दातुन से दाँत साफ़ करवाइए। ऋषि को दूध भी

खूब दीजिए। दूध पीना दाँतों के लिए अच्छा है।''

ऋषि बोल उठा, ''अच्छा डाक्टर साहब, मैं दो बार दाँत साफ़ करूँगा और दूध भी पिया करूँगा। फिर तो मुझे दर्द नहीं होगा?''

डाक्टर बोले, ''नहीं, फिर तुम्हारे दाँत में दर्द नहीं होगा। दाँत साफ़ रखने से दाँत में कीड़ा नहीं लगता। कीड़ा दाँतों को खोखला कर देता है। लो, यह लो दवा। दाँत साफ़ करते समय पानी में डाल लेना।''

ऋषि जाने लगा तो डाक्टर ने कहा, ''सुनो ऋषि, एक बात का और ध्यान रखना। दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए कच्ची सब्ज़ियाँ और फल खाना बहुत

ज़रूरी है। इससे दाँतों की कसरत होती है और दाँत साफ़ रहते हैं।''

माँ बोली, ''मैं इस बात का ज़रूर ध्यान रखूँगी। मैं इसे फल और कच्ची सब्ज़ियाँ खाने को दिया करूँगी।''

दवा लगाने से ऋषि के दाँत का दर्द कुछ ठीक हो गया था। वह खुशी-खुशी वहाँ से चल पड़ा।

बताओ

1. दाँत साफ़ न करने से क्या होता है?
2. डाक्टर ने ऋषि की माँ को क्या सलाह दी?
3. दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए क्या-क्या चीज़ें खानी चाहिए?
4. कच्ची सब्ज़ियाँ क्यों खानी चाहिए?

लिखो

ऋ = त्र ऋ ऋ ऋ

ऋषि ऋतु ऋचा आँख दाँत हँसना आँसू

दर्द सर्प बुरुश प्रणाम डाक्टर कंडक्टर

पढ़ो, समझो और लिखो

सुबह	शाम	मज़बूत	कमज़ोर
अच्छा	______	कच्ची	______
धीरे	______	साफ़	______
आगे	______	कम	______
अँधेरा	______	आज	______

करो

नीम या कीकर की टहनी का दातुन बनाओ। उससे दाँत साफ करो।
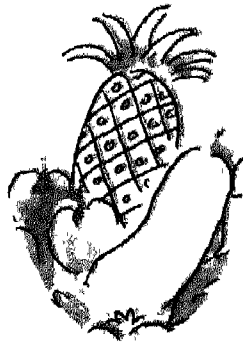
22. कौन

अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकाता कौन?

अगर न होतीं निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन?

अध्यापन संकेत: कविता को गाकर पढ़ें और फिर बच्चे और आप साथ-साथ गाएँ। इस कविता में प्रकृति के उपहारों का उल्लेख किया गया है। *कौन* वाली पक्तियों के संबंध मे प्रश्न पूछें — रात के समय रास्ता कौन दिखाता है? दिन को सोने-सा कौन चमकाता है? संसार की प्यास कौन बुझाता है? हरियाली कौन फैलाता है? इसी प्रकार अन्य पंक्तियों पर प्रश्न पूछकर कविता का भाव स्पष्ट करें। बच्चों से निकलवाएँ कि सूरज, चाँद, नदियां, पर्वत, पेड़, बादल आदि सभी हमें कुछ न कुछ देकर हमारी मदद करते हैं। हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए। अंत की दो पंक्तियों में *हम* शब्द बच्चों के लिए आया है।

अगर न होते पेड़ भला फिर
हरियाली फैलाता कौन?
अगर न होते फूल बताओ
खिल-खिलकर मुसकाता कौन?

अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम तो बोलो
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

❑ बालस्वरूप राही
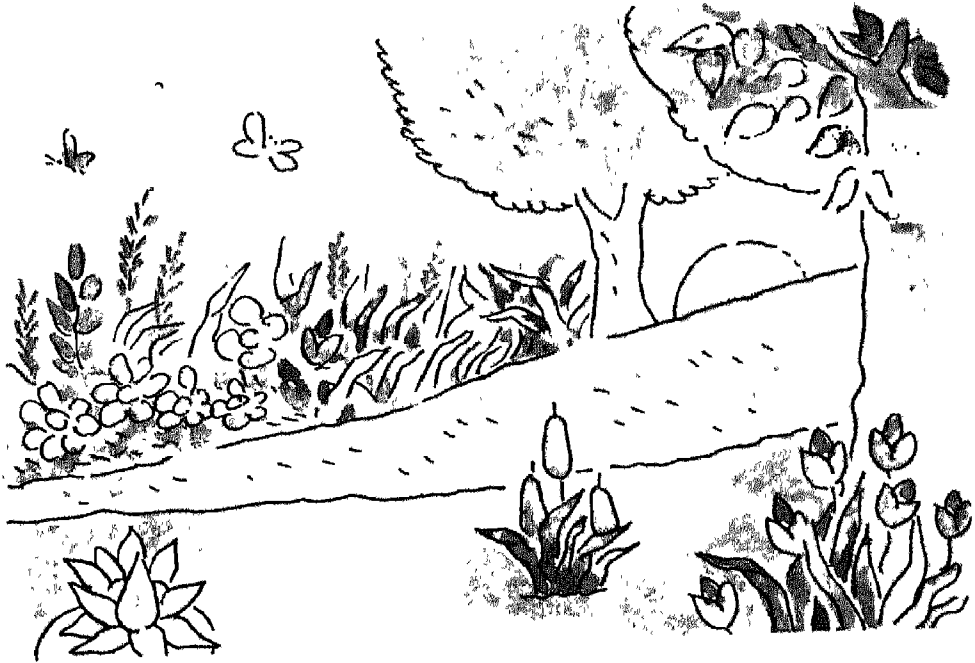
पढ़ो और समझो

निर्मल	=	साफ़	नभ	=	आसमान, आकाश
रच	=	बना	जग	=	संसार, दुनिया
पर्वत	=	पहाड़	प्रश्न	=	सवाल

चर्चा करो

1. आकाश में इंद्रधनुष कब दिखाई देता है?
2. पेड़ों से हमें क्या-क्या लाभ हैं?
3. सूर्य, चंद्र और बादल हमें क्या देते हैं?

पढ़ो, समझो और लिखो

पर्वतों से निकलते हैं ––– नदियाँ और झरने
पेड़ों से मिलते हैं –––
चाँद देता है –––
सूरज हमें देता है–––
बादल देते हैं –––

याद करो

इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।

23. हंस किसका

पक्षी	सिद्धार्थ	चहचहाना	घायल	घाव
शरीर	राजमहल	शिकायत	पट्टी	देवदत्त

सुबह का समय था। बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। पक्षी चहचहा रहे थे।

सिद्धार्थ बगीचे में घूम रहा था। अचानक पक्षियों का चहचहाना बंद हो गया। उनके चीखने की आवाज़ें आने लगीं। जैसे पक्षी डरकर चिल्ला रहे हों। तभी एक हंस उसके पैरों के पास आ गिरा। हंस के शरीर में तीर लगा हुआ था। वह तड़प रहा था।

सिद्धार्थ ने हंस को उठाया। उसने प्यार से हंस

अध्यापन संकेत: नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखें और उनके उच्चारण करवाएँ। *क्ष* और *द्ध* वाले शब्दों को श्यामपट या फ्लैश कार्डों से पढ़वाएँ और शुद्ध उच्चारण करवाएँ। इसी प्रकार *हंस* और *हँस* शब्दों को बार-बार पढ़वाकर अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) के उच्चारण-भेद से , अर्थ-भेद को स्पष्ट करें। ध्यान दिलाएँ : हमें जीवों के साथ दया का बरताव करना चाहिए। हमें किसी को सताना नहीं चाहिए।

के पंखों पर हाथ फेरा। धीरे से तीर निकाला।

सिद्धार्थ ने हंस का घाव धोया और पट्टी बाँधी। हंस का तड़पना कुछ कम हो गया। सिद्धार्थ उसे अपनी गोद में लिए रहा।

इतने में उसका भाई देवदत्त दौड़ा आया। वह

बोला, ''यह हंस मुझे दो। यह मेरा शिकार है।''

सिद्धार्थ ने उत्तर दिया, ''नहीं, यह हंस मेरा है। मैंने इसे बचाया है।''

वह हंस को लेकर राजमहल की ओर चल दिया। देवदत्त भी सिद्धार्थ के पीछे-पीछे चला।

सामने ही राजा खड़े थे। देवदत्त ने उनसे शिकायत की, ''सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं दे रहा।''

सिद्धार्थ बोला, ''पिताजी, देवदत्त ने हंस को
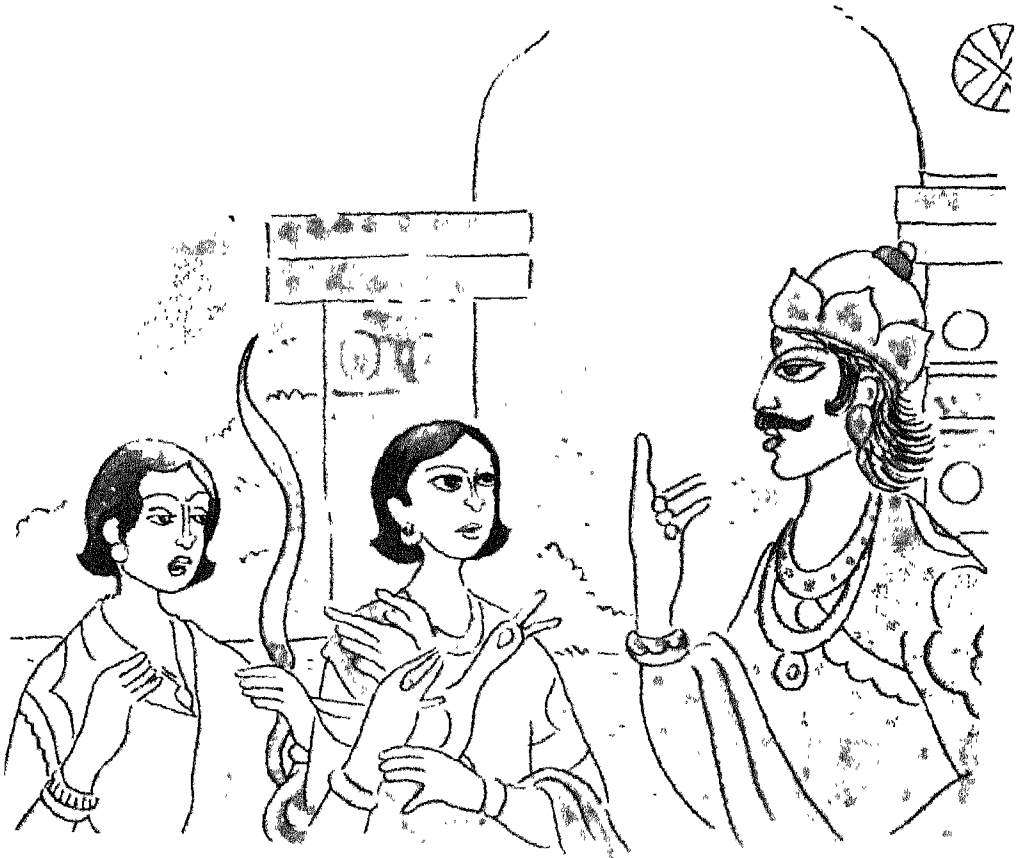
तीर मारा था। वह घायल हो गया। मैंने इसे पट्टी बाँधी। अब यह हंस मेरा है।''

देवदत्त बोला, ''नहीं, नहीं। यह मेरा है, मैंने इसे तीर से गिराया है।''

सिद्धार्थ ने कहा, ''लेकिन मैंने इसे बचाया है।''

राजा सोचकर बोले, ''देवदत्त तुम तो इस हंस को मारना चाहते थे। पर सिद्धार्थ ने इसे बचाया है। हंस सिद्धार्थ का ही है।''

बताओ

1. सिद्धार्थ कहाँ घूम रहा था?
2. हंस को क्या हुआ था?
3. सिद्धार्थ ने घायल हंस के लिए क्या किया?
4. देवदत्त ने हंस क्यों माँगा?
5. राजा ने क्या फैसला दिया?

इन वाक्यों को पूरा करो

चहचहाना राजमहल तीर रंग-बिरंगे घायल

1. बगीचे में ———— फूल खिले थे।
2. पक्षियों का ———— बंद हो गया।
3. हंस के शरीर में ———— लगा हुआ था।
4. हंस तीर लगने से ———— हो गया था।
5. वह हंस को लेकर ———— की ओर चल दिया।

समझो और पढ़ो

द् + ध = द्ध = बुद्ध सिद्धार्थ शुद्ध
त् + त = त्त = पत्ता देवदत्त छत्ता
ट् + ट = ट्ट = पट्टी मिट्टी छुट्टी

लिखो

पक्षी रक्षा हंस हँस
सिद्धार्थ शुद्ध बुद्ध देवदत्त

24. होली

पिचकारी श्याम टोली टेसू विक्टर गुलाल

विनोद पाठशाला से आते ही बोला, ''माँ मुझे कुछ पैसे दे दो। मैं बाज़ार से रंग और पिचकारी लाऊँगा।''

माँ बोली, ''बेटा, अभी तो होली में दो दिन हैं। क्या अभी से होली खेलोगे?''

विनोद ने कहा, ''माँ, श्याम कहता था, वह सब मित्रों को लेकर आएगा। मैं भी तैयार रहना चाहता हूँ। मुझे पैसे दे दो।''

माँ ने कहा, ''मैंने टेसू के फूलों से रंग बनाया है। यह लो पैसे, गुलाल और पिचकारी ले आना।''

अध्यापन संकेत: बच्चे होली कैसे मनाते हैं — चर्चा करें। *पिचकारी*, *श्याम*, *टेसू*, *विक्टर*, *गुलाल* — शब्दों का उच्चारण करवाएँ। टेसू के फूलों को उबालकर होली खेलने के लिए रंग बनाया जाता है, बताएँ। बातचीत द्वारा उभारें: होली मेल-मिलाप और भाईचारे का त्योहार है। पाठशाला में होली मनाएँ। बच्चे एक-दूसरे को गुलाल का टीका लगाएँ। होली से संबंधित कथा — *प्रह्लाद और होलिका* सुनाएँ।

माँ ने विनोद को कुछ रुपए दिए। विनोद को रास्ते में अपना एक मित्र मिला। वह भी रंग लेने जा रहा था। उसने रंग खरीदे। विनोद ने पिचकारी और गुलाल खरीदा।

होली का दिन आ गया। बालटी में टेसू का रंग देखकर विनोद खुश हुआ।
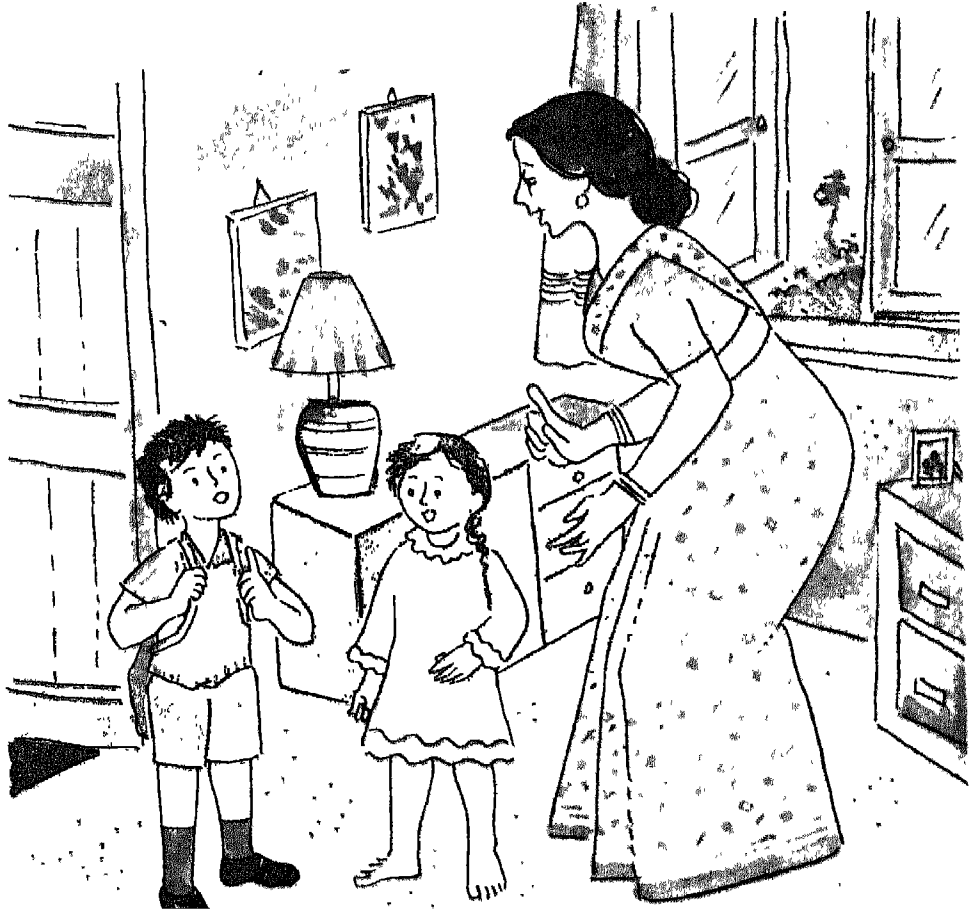
विनोद ने पिचकारी में रंग भरा और गीता पर छोड़ दिया। गीता का सारा कुरता पीला हो गया। वह रोने लगी। विनोद ने बहन को प्यार किया और बोला, ''गीता, रोओ मत। देखो, होली पर रंग खेलते हैं। तुम भी मुझ पर रंग डालो। मैं बिलकुल बुरा नहीं मानूँगा।''

गीता ने बालटी से रंग लिया और विनोद पर डाल दिया। दोनों भाई-बहन हँसने लगे। तभी श्याम, सुरजीत, विक्टर, नजमा और सलीम आ गए।

बच्चों ने खूब होली खेली। एक-दूसरे के मुँह पर गुलाल लगाया। गीता ने भी सब पर रंग डाला। सभी बहुत खुश थे।

पिताजी के मित्र भी होली खेलने आए। सब एक-दूसरे के गले मिले। माँ ने सबको मिठाई खिलाई।

बच्चे टोली बनाकर दूसरे मित्रों के साथ होली खेलने चल पड़े।

बताओ

1. विनोद रंग और पिचकारी क्यों खरीदना चाहता था?
2. माँ ने रंग किससे बनाया?
3. गीता क्यों रोने लगी?
4. बच्चों ने होली कैसे मनाई?

लिखो

तुम होली कैसे मनाते हो, पाँच वाक्य लिखो।

वाक्य बनाओ

मैं	एक-दूसरे के	रुपए दिए।
माँ ने	रंग और पिचकारी	गले मिले।
गीता ने	विनोद को	लाऊँगा।
सब	बालटी से	रंग लिया।

पढ़ो और लिखो

प्यार प्यास सप्ताह समाप्त श्याम अवश्य

तुरंत परंतु जंतु रंग विक्टर डाक्टर
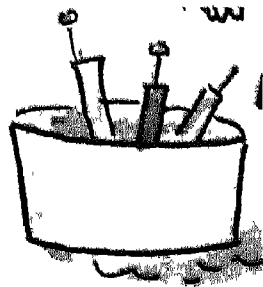
25. ऋतुएँ

सूरज तपता धरती जलती
गरम हवा ज़ोरों से चलती
तन से बहुत पसीना बहता
हाथ सभी के पंखा रहता।

आ रे बादल, काले बादल
गरमी दूर भगा रे बादल
रिमझिम बूँदें बरसा बादल
झम-झम पानी बरसा बादल।

अध्यापन संकेत: इस कविता में *रिमझिम, झम-झम, टप-टप, चम-चम, रंग-रंग, रंग-रंगीली* जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ और बार-बार पढ़वाकर यह स्पष्ट करें कि शब्दों के दोहराने से ये पंक्तियाँ सुनने में अधिक अच्छी लगती हैं। हमारे देश की तीन मुख्य ऋतुओं की चर्चा इस कविता में है — *गरमी*, *बरसात* और *सरदी* या *जाड़ा।* तीनों ऋतुओं के बारे में कक्षा के तीन समूह बनाकर बातचीत करें। प्रत्येक समूह अपने निश्चित मौसम की विशेषताएँ बताए और उसी के अनुसार चित्र बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करें। इन ऋतुओं से संबंधित कुछ अन्य कविताएँ सुनाएँ और याद करवाएँ।

लो घनघोर घटाएँ छाईं
टप-टप टप-टप बूँदें आईं
बिजली चमक रही अब चम-चम
लगा बरसने पानी झम-झम।

लेकर अपने साथ दिवाली
सरदी आई बड़ी निराली
शाम सवेरे सरदी लगती
पर स्वैटर से है वह भगती।

सरदी जाती गरमी आती
रंग-रंग के फूल खिलाती
रंग-रंगीली होली आती
सबके मन उमंग भर जाती।

रात और दिन हुए बराबर
सोते लोग निकलकर बाहर
सरदी बिलकुल नहीं सताती
सरदी जाती गरमी आती।

पढ़ो और पूरा करो

(क) आ रे बादल, काले बादल
गरमी दूर ____________

(ख) लेकर अपने साथ दिवाली
सरदी ____________

(ग) रंग-रंगीली होली आती
सबके मन ____________ ।

(घ) सरदी बिलकुल नहीं सताती
____________ ।

बताओ

1. गरमी में क्या-क्या अच्छा लगता है?
2. सरदी में क्या-क्या होता है?
3. बरसात में क्या-क्या होता है?
4. होली कब आती है?
5. दिवाली कब आती है?

पढ़ो और लिखो

ऋषि ऋतु ऋण ऋचा

पढ़ो और समझो

तपना	=	बहुत गरम होना
तन	=	शरीर
घनघोर घटाएँ	=	घने बादल
उमंग	=	जोश